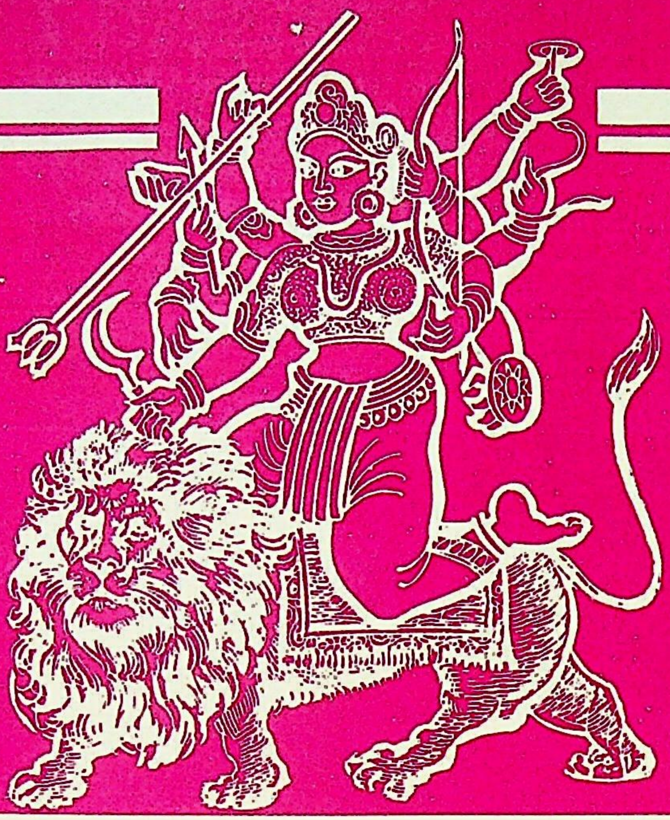


माधव भक्ति रहस्य

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

॥ श्रीः ॥

माधव भक्ति रहस्य।

अर्थात्

कायस्थ-कुल-तिलक, भक्तश्रेष्ठ, कवि-वर

मुन्शी माधव रामजीकृत-

भक्तिके अद्वितीय तीन ग्रन्थ.

शक्ति-भक्ति-प्रकाश, करुणा-बत्तिसी, करुणाऽष्टक.

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

संस्करण : अप्रैल २००६, संवत् २०६३

मूल्य : ४५ रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

। समर्पण ।

दोहा ।

जन्मदान सँग जिन दियो, ज्ञान ध्यान बल धर्म ॥
पूज्यपाद तिन **मान** कों, स्मरों मानजुत पर्म ॥ १ ॥
श्री गुरु **पूर्णानन्द** की, पाकर कृपा प्रशंस ॥
बने पूर्ण आनंद मय, माथुर-कुल-अवतंस ॥ २ ॥
जदपि बास कैलास किय, छाँडि पिसाँगण थांन ॥
यश-तन अजहों नित नयो, भयो रहत जुत मान ॥ ३ ॥
राजमान श्री **मानमल**, जिन ग्रंथन विच चैन ॥
करत समर्पण भक्तियुत, **शिवप्रताप** नत-नैन ॥ ४ ॥

। मनहर ।

इष्ट के अराधनमें स्वामि हित साधन में ।
दीन दुख बाधनमें निपट प्रवीन भो ॥
अजन की रीत सदा सज्जन पुनीत रहि ।
स्वारथ कों छाँडि परमारथ में पीन भो ॥
साधिसाधु सेवा त्यों आराधि शिव एकरस।
भेद-भान-छान ज्ञान ध्यान लवलीन भो ॥
जनक प्रमान **मान** जनक सुजान मेरे ।
तत्व तन छीन ह्वैकें तिरे गुन-तीन भो ॥ ५ ॥

सवैया ।

दच्छ रहे नृपनीतिके पच्छ में । पूर प्रतच्छ ही स्वच्छ निहारे ॥
शिष्ट स्वभाव विशिष्ट सुधर्म में । निष्ठ सदा सत इष्ट सहारे ॥
दोष विरक्ति प्रसक्ति जु भक्ति में । त्यों अनुरक्ति लखी गुण सारे ॥
माधवतें नहि हेट रहे नित । या हित भेट ये ग्रंथ तिहारे ॥ ६ ॥

शिवप्रताप.

भूमिका।

संसार हर्ष, मोह, आश्चर्य आदि नाना भावों को उत्पन्न करने वाले अनेक प्रकारके पदार्थों से इतना भरा हुआ है कि, उसके एक तुच्छ अंश का विचार भी मनुष्य को चकित करदेताहै। इस विराट् विचित्रताके अनन्त सागर का थाह यदि किसी देश ने पाया है तो वह एकमात्र भारत वर्ष ही है। इसके अमूल्य रत्न त्रिकाल दर्शी पूज्यपाद महर्षियोंने ऐसे ऐसे ईश्वरीय गुप्त भेद विलक्षण योगशक्ति द्वारा प्रकाशित किये हैं कि जिनको थोडासा सुनकर भी वर्तमानकाल के धुरीण, कला–कौशल–विशारद, युरोपियन–विद्वान्‌गण चकित होते हुए भारतीय आध्यात्मज्ञानका सर्वश्रेष्ठ और अति आदरणीय होना एक वाक्य से अंगीकार करतेहैं।

पूज्यपाद महर्षिगणने इस विराट् संसारको जड और चेतन दो शक्तियोंमें विभक्त कियाहै, जैसे एक बालक की उत्पत्ति, स्थिति का आधार माता और पिता पर है, वैसेही यावन्मात्र पदार्थ की उत्पत्ति का हेतु चेतन व पोषक प्रकृति है। चेतन की सत्ता ही से प्रकृति सदा कार्य्य कर सकतीहै, वैसे ही प्रकृति की अनुकूलता से ही चेतन अपने सच्चिदानन्द स्वरूप को पा सकता है, परन्तु ये दोनो वैसे ही हैं जैसे मनुष्य और उसकी शक्ति, परिणाम में दोनो का अवसान एक ही में होने से वेदान्त ने अद्वैतभाव ही सिद्ध किया है, अतः निर्विवाद है कि, अध्यात्मिकदृष्टि से महामाया और ईश्वरमें कोई भेद नहीं है, तथापि महर्षियों ने इस चर्मचक्षुका विशेष आधार रखने वाले, साधनावस्था में रहनेवाले सांसारिक जीव को द्वैत के द्वारा ही अद्वैत में लाना कल्याणकारक मान है और सात्विक भाव बढाने के लिये उससे यम, नियम, आचार, विचार,

दान, दया आदि अनेक कर्म रूपसे प्रकृति माता की आध्यात्मिक उपासना कराते हैं और प्रकृति भेद से मोक्ष प्राप्ति के दो मार्ग दिखाते हैं जो भक्ति और ज्ञान हैं।

भक्ति में पंच तत्त्व के तारतम्य से पंच केन्द्र स्थापित करके पंच देव अर्थात् विष्णु, शिव, शक्ति, गणपति, और सूर्य्यकी उपासना का उपदेश करते हैं। इनही में से गुरूके बतलाये हुए किसी एक मार्ग को लेकर साधक शान्ति पूर्वक कल्याण पद को पा सकता है। अब विचारने से ज्ञात होगा कि सब लोग विधि भेद से वास्तव में एक ही की उपासना कर रहे हैं। प्राचीन काल में यही शैली मनुष्य मात्रको ऐक्य भावमें लाकर परस्पर स्नेह का कारण थी, यही शैली शान्तिका धाम थी, यही शैली भारत के सौभाग्य का हेतु थी परन्तु हाय ! शोक ! जब दैव विपरीत होताहै तब अमृतके बीज में भी हलाहल की टहनियाँ फूटती हैं। भारतमें भी वैसाही हुआ अर्थात् वे ही पंचोपासना तात्पर्य्य को छोड सामाजिक ममता में बँधी, साधनावस्था मिट सिद्धावस्था हुई, प्रत्येक मंडलमें एक मुख्य और अन्य गौण समझी गई, एक एक की अनेक शाखा होकर प्रत्येक ने मुख्यताही का पद लिया और उसके साधन में अन्य सब न्यून बतलायेगये, व्यक्ति सन्मान धर्म में घुसा, इस का फल यह हुआ कि जो शैली ऐक्य भावकी दृढश्रृंखला थी वह अज्ञान भावसे भेद और द्वेष की मूल हो बैठी। जिस किसी ने इस के सुधार में हाथ डाला वो ही अन्त में एक नवीन मार्ग का हेतु हो गया, जो पुराना २ कहते भी नवीन ही माना गया।

जो केवल अपने लिये भक्त हैं, आत्मोद्धार के लिये ज्ञानी हैं, वे ही मात्र इस समय में प्राचीन शैली के अनुसार सर्व केन्द्रों में यथार्थ ऐक्य देख रहे हैं। यही उनकी परा-भक्ति के लक्षण हैं, वेही धन्यहैं !!

प्राचीन काल में ऐसे भक्त प्रत्येक जाति में हो चुकेहैं क्योंकि ईश्वर के घरमें कोई जाति नहीं है कहा भी है:-

जाति पाँति पूछै नहिं कोई। हरिको भजै सो हरि का होई॥

कायस्थ कुलमें भी एक ऐसे भक्त मुन्शी माधवरामजी हुए हैं कि जिन का नाम शाक्त और वैष्णव अति स्नेह और सन्मानके साथ लेतेहैं—इतना ही नहीं किन्तु इनकी बनाई हुई "शक्तिभक्ति प्रकाश" को हजारहों शाक्त और "करुणाबत्तीसी" को हजारहों वैष्णव प्रातःकाल श्रद्धाके साथ पाठ करते हुए इष्ट भक्ति का साधन मानते हैं।

माधवरामजी के उन्हीं सर्व प्रिय ग्रंथों को शुद्ध रूप में छाप कर सर्व साधारणकेलिये सुलभ करना हमारा उत्साह है कई प्रतियोंसे मिलान करके पूर्ण परिश्रम से शुद्ध कर हमने तीनों ग्रंथों को यही बताने के लिये एक पुस्तक रूपमें दिया है कि माधवरामजी ने जिस सच्ची भक्तिसे देवी की स्तुति की है वैसे ही भक्ति-द्रवित हृदय से "करुणा बत्तीसी" और "करुणाऽष्टक" में श्रीकृष्ण चन्द्र आनंदकन्द की स्तुति प्रार्थना की है। यहाँ पाठक गण को यह जिज्ञासा होना संभव है कि माधवरामजी कौन थे, कहाँ के थे, कब हुए इत्यादि। इन्हीं बातों को दिखाने के लिये हम संक्षेप रूप से उनका यथा लब्ध जीवन चरित्र लिखते हैं।

। "मुन्शी माधवरामजी"।

मुन्शी माधवरामजी मारवाड में प्रसिद्ध नगर मेडते के रहनेवाले उतरेलिया अल्ल के माथुर कायस्थ थे। इनका वंश वहाँ पहिलेसे भी प्रतिष्ठित माना जाताथा, परन्तु ये सब प्रकारसे ऐसे योग्य हुए कि अब वह वंश उन्हीं (माधवरामजी) के नाम से परिचित है। इनके पिता का नाम भगवानदासजी और पितामहका नाम

जीवणदासजी था, वे भी परम धार्मिक और भक्त थे, उन का रहना कभी नागोर और विशेष मेडते में इसी लिये होता था कि दोनों नगरोंमें उनकी जागीर की धरती थी । यह वृत्तान्त नहीं मिलता कि माधवरामजी का जन्म ठीक किस वर्षमें और कहां हुआ, एवं उनके बाल चरित्र भी विस्मृत हैं । परन्तु उनके वंशमें इस समय कृष्णगढ, उदयपुर आदि स्थानों में जो योग्य व्यक्ति विद्यमान हैं उनके पास की प्राचीन पट्टे परवाने आदि सामग्री से इतना जाना जाता है, कि मुन्शीजीका जन्म संवत् १७४० के लग-भग हुआ । यह संस्कृत के पंडित और फार्सीके मुन्शी थे, और जैसे परम भक्त थे वैसे ही राज कार्य में भी पूर्ण दक्ष थे । माधव-रामजी ने कविता करना "वृन्दसतसई" के कर्ता कवि वृन्दजी से सीखा था, एवं फार्सी व अदालती कार्रवाई जोधपुरमें मुन्शी नाहरखाँजी से प्राप्त की थी, आदि में नाहरखाँजी के आश्रयमें रहते हुए राज कार्य्य करते रहे, अन्तमें उन्हींके द्वारा संवत् १७७१ में पूर्ण अधिकारके साथ दिल्ली की सेवा मिली । मुन्शीजी संवत् १७९८ तक पूर्ण स्वामि भक्ति के साथ दिल्ली में काम देते रहे और अपनी असाधारण बुद्धि वैभव से शाही दरबारमें भी प्रसंग जमा लिया, कभी २ जोधपुर भी आते थे, और एक बार जब संवत् १७८६ में शाही हुक्मसे महाराजा साहिब अभयसिंहजी गुजरात में सूबेदार सर बलन्दखाँ को सर करने भेजे गये, तब मुन्शीजी को भी साथ ले गये थे । फिर संवत् १७९८ के लगभग मुन्शीजी दिल्लीसे जोधपुर बुलाये गये और कुछ कलंक लगाकर कारागार में डाल दिये गये, जहाँ उनको दो वर्षके लग भग रक्खा और वहां कई प्रकारसे उनको दुःख दिया गया । दिल्ली का हिसाब न भुगतान कैद करने का एक कारण बतलाया जाता है, परन्तु यह निश्चय है कि किसी चारणने उनकी चुगली खाई थी क्योंकि

"शक्तिभक्तिप्रकाश" के चौथे प्रकरणके बाईसवें कवित्तमें मुन्शीजीने स्वयं इसका वर्णन किया है। महाराजा अभयसिंहजी का राज्यकाल मारवाडमें अच्छा समय माना जाता है, और मुन्शीजी की निर्दोषता, अपनी जगदंबा से हार्दिक प्रार्थना, बेडियोंके टूटने, कैदसे छूटने और उच्च अधिकार पर दूसरी बार भेज दिये जाने से सिद्ध है, इस से यह ही निश्चय होता है कि अच्छे राजाओंके पास भी जब बुरे सलाहकार हों तो उनके हाथसे कभी न कभी अन्याय करा ही देते हैं, किसी कविने कहा है:-

दोहा—बडा राज यूँ बीगडै, कान लकुन्दर लग्ग।
बन्दर कान बँदूकके, अन्दर ऊठै अग्ग॥

जैसे विपरीत समयमें भलाई से बुराई होती है वैसे ही किसी समयमें बुराई से भलाई भी होती है—जैसे कारागारके समयमें इन अमूल्य ग्रंथ—रत्नोंका प्रादुर्भाव हुआ और मुन्शीजी की परम भक्ति जगद्विख्यात हुई। "शक्तिभक्तिप्रकाश" की रचनासे श्रीमहामाया प्रसन्न हुई और तीन बार उनके पैर की जंजीरें निकल पडीं। जब तीसरी बार श्रीदेवीजीने उनको कैदसे निकालनेके लिये पूछा तो माधवरामजीने स्वीकार नहीं किया—उन्होंने विनती की कि लोग यह समझेंगे कि कैदसे भगगथा, मुझको जिसने यहाँ भेजा वही आदर पूर्वक छोडै, और अंतमें उनकी इच्छानुसार ऐसाही हुआ। कहते हैं कि जब "शक्तिभक्तिप्रकाश" कारागारमें लिखी गई, लोगों ने यह समझ कर कि महाराजा साहब परम वैष्णव हैं, माधवरामजीकी चुगली खाई कि उन्होंने हुजूर के धर्म के विरुद्ध हुजूर की निन्दा का ग्रंथ रचा है। इस पर मुन्शीजी अपना लिखा हुआ लेकर दरबारमें बुलाए

गये और उसको सुनाने की आज्ञा पाकर मुन्शीजी ने अपनी असाधारण तुरतबुद्धि से "करुणाबत्तीसी" के बत्तीस कवित्त उसी समय पढ दिये, इससे और बेडियोंके टूटजानेसे महाराजा साहबने उनको सच्चे चमत्कारी भक्त जानकर तत्काल कारागार से छोड दिया। निश्चय होताहै कि इसी से घृणा करके मुन्शीजी जोधपुर छोड महाराजकुमार बहादुरसिंहँजी के पास कृष्णगढ चले गये और अपने पुत्र माईदासजी को तो सदाके लिये जोधपुर से हटा दिया। महाराजकुमार ने आदर के साथ उनको रक्खा और जागीर दी। गुण का ज्ञान प्रायः मनुष्य के न रहने पर ही होताहै, तदनुसार फिर मुन्शीजी की आवश्यकता जोधपुर महाराजा साहब को हुई, क्योंकि इनके स्थान में जो दिल्लीके काम पर भंडारी रघुनाथजी भेजे गये थे उनसे वहाँ का कार्य्य ठीक २ न चला सका, और उनकी अयोग्यतासे महाराजा साहब पर बादशाह की अप्रसन्नता हो गई। इस का समाधान करनेके लिये फिर मुन्शीजी ही को संवत् १८०२ में आग्रह पूर्वक दिल्ली भेजना पड़ा और उन्होंने वहाँ जाते ही सब ठीक करके स्नेह, तसल्ली, और प्रसन्नताके फरमान जोधपुर भिजवाये जिससे महाराज साहब अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर संवत् १८०६ में अभयसिंह जी के स्वर्गवास होने पर रामसिंहजी गद्दी बैठे और उन्होंने मुन्शी जी को दोनों जसवंतपुरों की हाकिमी दी। इनमें से एक जसवंतपुरा दिल्लीके पास और दूसरा पंजाबमें लाहोर के पास था। तब से मुन्शीजी दिल्लीके पास के जसवंतपुरे में रहने लगे। इसके पीछे यह निश्चय नहीं होता कि उन का देहान्त कहां और कब हुआ, केवल उनके नाम के केकड़ी इत्यादिकी जमीन के पट्टों की मिती से अनुमान होताहै कि उनका देहान्त संवत् १८२८ के लगभग हुआ और उस समय उनकी अवस्था ८८ वर्ष की थी।

ऊपर लिखा जा चुका है कि मुन्शीजीके पुत्र माईदासजी मुन्शीजी के जीतेजी कृष्णगढ जा बसेथे। वे भी सुयोग्य और भाग्यशाली हुए। उन्हींका वंश बढ़ा पाटवी संतान उनके इस समय कृष्णगढ में मुन्शी बिहारीदासजी आदि सुयोग्य जन राजके ओहदों पर काम कर रहेहैं, और उदयपुरमें मुन्शी केसरीलालजी, त्रिभुवनलालजी आदि और अजमेर में मुन्शी मगनलालजी आदि हैं। माधवरामजी की हार्दिक भक्ति और सुरसकविताशक्ति इन ग्रन्थों से भली विधि झलकतीहै अतः विशेष लिखनेकी आवश्यकता नहीं। माधवरामजी की भक्ति से जगन्माता ने कई स्थानों पर उनकी आश्चर्यकारक रक्षायें की थीं जिनमें से कई एक का वर्णन माधवरामजीने 'शक्तिभक्तिप्रकाशमें' किया है। इनकी नित्य सेवा पंचायतन स्वरूपकी थी; अर्थात् विष्णु (शालिग्राम) शिव (नर्मदेश्वर) देवी (सर्वधातुकी प्रतिमा) गणपति (शोणभद्र) सूर्य्य (चांदी का यंत्र) यही सब उपासनातारतम्य से उनके सामने पृथक् २ होकर भी एक ही थीं।

हमें हमारे चरित्रनायक का इतना सा परिचय भी उनके लिखे हुए एवं उनके नाम आये हुए पत्रों से जिनको उन की संतान ने एकत्र कर रक्खे हैं मिला है, क्याही उत्तम हो कि वे उन्हें पुस्तकाकार में छपवादें।

खेद है कि पूर्ण सामग्री के अभाव से हमें यहाँ, मुन्शीजी का इतनासा ही यथोपलब्ध वृत्तान्त देकर रुकना पड़ताहै। अगत्या न उनका स्वरूपज्ञान करा सकते हैं, न स्वभाव का परिचय देसकते हैं—न उनके उपदेश दायक पूर्ण सत् चरित्रों को ही बतासकते हैं—कारण कि उन सब के बीचमें विस्मृति का अभेद्य टेरा आचुका है। यदि कुछ भी बतासकते हैं तो यही सुललित और भक्तिरसामृत-स्रोत "ग्रंथ-त्रिपुटि"-आशा है कि पाठक गण इसी अमूल्य प्राप्ति से संतोषके साथ आनंदके भागी होंगे।

मैं उन महाशयों का जिन्होंने कृपा करके मुझको इन ग्रंथों के शोधन में कई प्रकार से सहायता दी धन्यवाद दिये विना इस भूमिका को समाप्त नहीं करसकता। सब से अधिक मैं कविरत्न बारहट श्रीकिसरीसिंहजी साहिब का आभारी हूं जो आद्योपांत इस कार्य में बडे अनुराग से मेरे साथी रहे हैं। उनकी सहायता केवल ग्रन्थों के शोधन ही में नहीं है परन्तु प्रूफ देखने जैसे निरस कार्य में भी है और कोष तो सर्वस्व उन्हीं ने बनाया है। मुन्शी विहारीदासजी साहिब कृष्णगढवालों और मुन्शी त्रिभुवनलालजी उदयपुरवालों ने कृपाकरके कवि श्रीजयलालजी साहिब के शोधे हुए तीनों ग्रंथ और मुन्शी माधवरामजी के जीवनचरित्र की सामग्री भेजी। लाला कानमलजी नारनोलिया ने अजमेर से पंडितजी महाराज श्री १०८श्री शिवनारायणजी की शोधन कीहुई अपनी शक्तिभक्तिप्रकाश की पुस्तक मुझको दी और नागोरवाले लाला ईदरमलजी साहिब भिवाँणी हाकिम जोधपुरने महामहोपाध्याय कविराजा श्रीमुरारदानजी साहिब की शोधी हुई शक्तिभक्तिप्रकाश की पुस्तक कृपाकरके मुझको भेजी— इसी प्रकार शास्त्री बालकृष्णजी, शास्त्री लक्ष्मीदत्तजी पं०जगन्नाथजी आदि कई साहिबोंने मेरी सहायता की है। इन सब महाशयोंको मैं पूर्ण रूपसे हार्दिक धन्यवाद अर्पण करताहूँ।

फाल्गुन शुक्ल ११
संवत् १९६६

शिवप्रताप.

॥ श्रीभगवत्यै नमः ॥

। शक्ति-भक्ति-प्रकाश ।

॥ प्रथम प्रकरण ॥

दोहा-शिव हरि अज इन्द्रादि सुर,
चरन शरन अवलम्ब ।
बिघन हरन मंगल करन,
जय जय श्री जगदम्ब ॥ १ ॥

॥ श्रीगुरुनाथ ध्यान ॥

॥ कवित्त (मनहर) छन्द ॥

सैंस-दल-कमल पैं राजत बिमल रूप,
इन्दीबर दोऊ कर अभै-वर धारि हैं ।
अमल बसन सुधाधरसो प्रसन्न मुख,
ताको नेक ध्यानही प्रचंड पाप हरिहैं ॥
धर्म अर्थ काम मोक्ष दायक सहायक भौ,
नाम के उचारे ही ते द्वन्द कोटि टारि हैं ।
नाथन के नाथ गिरिनाथसे दिवैया आथ,
ऐसे गुरुनाथ सो सनाथ मोहि करि हैं ॥ २॥

॥ मन्त्र महिमा ॥

॥ मनहर ॥

ऐसो महा-मंत्र सो कह्यो है शिव-तंत्र बीच,
ताके धारैं भयो बिधि सृष्टि-करतार है ।
पावत पदार्थ-चार षट-रस सात सुख,
आठ-सिद्धि नवौं निद्धि करें जे उचार है ॥
संकट हरन शिव मंगल करन पुनि,
पोषन भरन भव-दुरित विडार है ।
आगम के पार औ पुरान पार स्मृति पार,
वेद हू के पार एक-अक्षर अपार है ॥३॥

॥ ध्यान ॥

कान्ति रवि प्रात लाल अर्ध-चन्द्र बिन्दु भाल,
लोचन बिशाल लाल बसन सुरंगा हैं ।
कटि-तट छीन सुनितम्ब औ उरोज पीन,
जोबन नवीन सीस मोतिन की मंगा हैं ॥
सरन सधार भुज चार चार आयुध हैं,
सिंहपै सवार ह्वैके जीते केउ जंगा हैं ।
राजत अनगा अंगा रहैं बीर चंगा संगा,
शिव-अरधंगा मेरे अम्बा को पठंगा हैं ॥४॥

उपासना भाव ब्रह्मरूप निरूपण ।

॥ मनहर ॥

एरी जगरानी तेरी अकथ कहानी ताहि,
रटैं बेदबानी सब जोतिन को कन्द है ।
निर्गुन सगुन दोऊ तेरो ही सरूप बनें,
भेद भाव जानें तेही मूढ़ मतिमन्द हैं ॥
तूही रमा राम श्याम श्यामा जू जसोदा तूही,
तूही बलदेव वसुदेव नन्दनन्द है ।
तू ही अज शेष शिव तुंबरु गनेस तूही,
तूही है सुरेश हरि तूही रवि चन्द है ॥ ५ ॥

तूही जग कारन औ तारन तरनि तू ही,
तू ही है सँहार खलु दैन दण्ड सासना ।
चिदानन्द-सिन्धु ताकी आनँद लहर तू ही,
तू ही सुख कन्द दुःख द्वन्द हू की नासना ।
ईश्वर स्वरूप ह्वै के विश्वको उदयोत कीनों,
ओत पोत ब्रह्म सदा जैसे फूल बासना ।
देव नर किन्नर गरीबन की चली कहा,
हर हरि बिधि तेरी करत उपासना ॥ ६ ॥

तेरो ध्यान पर्म तत्त्व ज्ञान को उजागर है,
देत भक्ति युक्ति परमुक्ति को उपाव है ।
तेरो जाप तीन-ताप पाप सब काटि डारैं,
तूही भवसागर के तिरबे की नाव है ।
तूही महा मोह क्रोध बोध औ विवेक तूही,
तूही ब्रह्म कर्म जीव काल औ स्वभाव है ।
सूक्षम औ स्थूल महा कारन शरीर तेरो,
जहाँ जहाँ देखूँ तहाँ तेरो ही बनाव है ॥७॥
तूही बेद आगम पुरान औ कुरान तू ही,
अजपा-प्रणव तूही तूही षटमत हैं ।
तूही शिव शक्ति मूल-प्रकृति सुभक्ति तूही,
तूही बन्ध मोक्ष पुनि तूही जू सुमत हैं ॥
तूही हर्ष शोक तीन लोक को अधार तू ही,
तूही सुख सम्पति तू टारन बिपत हैं ।
तेरे माया-यन्त्र सब जगत अरूढ भयो,
दशौं अवतार तेरे प्रेरे ही भ्रमत हैं ॥ ८ ॥

तूही योग यज्ञ दान तूही ध्याता ध्येय ध्यान,
तूही ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान तूही देव दानवी ।
तूही है प्रवृत्ति औ निवृत्ति हू तिहारो रूप,
नित्य औ अनित्य तूही तुर्या उर आनवी ॥
तूही इच्छा क्रिया सब साधन समाधि तूही,
तूही योग-निद्रा नव-दुरगा बखानवी ।
तू ही है अरूप सब देखिये सो तेरो रूप,
कहै माधोराम तो कूं पर्म-ज्योति जानवी ॥९॥
तूही बालि वामन औ कुम्भकर्न रावन तू,
कंस शिशुपाल माया-जाल में जँझेरे हैं ।
तूही महामोहनी अछोहनी अठारह तू,
कौरव कों कालरूप भारत में प्रेरे हैं ॥
लीला है अनन्त चतुरानन न जानै भेद,
यादवकुलहिं पल एक में निबेरे हैं ।
धारे अवतार भूमि भारके निवार हेत;
उन को तो नाम हैं पैं काम सब तेरे हैं ॥१०॥

तू ही नर नारी बिर्दधारी घरबारी तू ही,
तू ही ब्रह्मचारी जटाधारी औ अनूप है।
तू ही भोग भोगी है बिजोगी औ सँजोगी तू ही,
तू ही दया मया माया छाया अरु धूप है॥
तू ही वेदव्यास शुक शंकर सनक तू ही,
तू ही है जनक तू ही सीता जोत रूप है।
तू ही नग पन्नग कुलीन कुलहीन तू ही,
राव रंक भूप सबै तेरो ही स्वरूप है॥ ११॥

चौदह भुवन तीन लोक सातदीप पुनि,
श्रुति औ पुराण बीच कहैं नव खण्ड है।
अणु अरु मेरु परियन्त धर्म्म सत्ता तेरी,
तेरी पर्म शक्ति को बिलास पिण्ड पिण्ड है॥
तेरो ही स्वरूप ये बिराट सो अनूप बन्यो,
ठौर ठौर फैली ऐसी माया परचंड है।
शक्ति है अपार ताको किन हू न पायो पार,
रोम रोम बीच कोटि कोटि ब्रहमण्डहै॥१२॥

नमो ब्रह्म रूपिणी अरूपिणी सकल रूप,
हर हू न जानें गति तेरे अवतार की ।
शेष औ गणेश लवलेश हू न पावत हैं,
गावत सुरेश ना सुमार तहां मार की ॥
वरुन कुबेर धर्म रुद्रसे बिचारे कहां,
अज हू धरत रज पायन उदार की ।
नेति नेति रटैं वेद ईश्वर न जानैं भेद,
शिव हू न पाई माया महिमा अपार की॥१३॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्र ईश सदाशिव पञ्च प्रेत,
चिदानन्द रूप परयंक के कहार हैं ।
चन्द्रसे वितान कोटि भानुसे मशालची हैं,
महा तत्त्व मंत्री गुण-तीन पेशकार हैं ॥
पासी जलधारी धनपालसे भंडारी त्योंहीं,
कोटि सुरपाल लोकपाल चोबदार हैं ।
नाग यक्ष किन्नर हैं पामर पयादन से,
देवी ! जगदम्ब ! तेरी ऐसी सरकार हैं ॥१४॥

पौनसे फरास कोटिदास कइलासपाति,
चित्रगुप्त लेखक रु यम कोटवार हैं।
चिन्तामनि तेरी दासी पाँवबँधी मैनकासी,
दैवतरु देवी तेरे बागन को झार हैं॥
आठ सिद्धि नवनिधि चार वर्ग पौर खरी,
कोटि कोटि मेघमाला द्वारे पनिहार हैं।
राजन की राजा महाराजा श्रीसुराजरानी,
अंबिका भवानी ! तेरी ऐसी सरकार हैं॥१५॥
चारमुखवारो आठों जाम चार वेद रटैं,
पञ्च मुख वारो तोहि ध्यान में बताइये।
छैमुख औ गजमुख लीन तेरे ज्ञान बीच,
सैंसमुख गावैं पर पार नहिं पाइये॥
बेरुके कनंका जेते तेरे हैं विचित्र गुन,
चिन्तामनि तेरी ही कृपा तें चित चाइये।
मेरे एक रसनाहै सो हू मेरे बस ना है,
देवी ! जगदम्ब तेरे कैसे गुन गाइये॥ १६॥

सनक सनन्द सनातन औ सनत सब,
रैवत औ दत्तात्रेय ध्यान बीच रति हैं।
व्यास शुकदेव महानन्द हू को ऐसो कौल,
शङ्क चन्द्रचूड हू न पावत ये गति हैं॥
ऐसे कोटि योगी पचिहारे पैं न पायो पार,
कहत पुकार वेद सोई बात सति हैं।
शेष है सहस्त्रजीभ तोहू आप मूक जानैं,
तेरे गुन गायबे कों मेरी कहा मति हैं॥१७॥

तेरी शक्ति पाय नरसिंह रूप धारयो हरि,
अग्नि असि अप तें प्रल्हाद को उबारयोहै।
तेरी यह शक्ति सों वामन बलि छलवे कों,
चौदह भुवन बीच अंग बिसतार्‌यो है॥
जानकी को रूप धार सिधारी समुद्र पार,
राम कों बुलाय दशकन्ध हि विडार्‌यो है।
श्यामजूके वामें अंग राधिका को धाम तातें,
वाहीहूकी शक्ति गिरि वाम-कर धार्‌योहै॥१८

ऐसी तेरी भक्ति हू की शक्ति को प्रभाव सुन्यो,
दैत्यन कुचल लोह पेट माहिं पचिगो ।
तेरीभक्ति शक्ति ही सों विश्वामित्र राजऋषि,
ब्रह्मा हू सों झगर कें सृष्टि नई रचिगो ॥
ऐसी महा शक्ति के प्रभाव तें अगस्ति मुनि,
भरि कर अञ्जली में वारिधि कों अँचिगो ।
तेरी ही परम शक्ति भक्ति सों अछौहिनीमें,
भाइन सहित पार्थ भारत में बचिगो ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

तेरी शक्ति अपार को, वेद न जानें भेद ॥
तुच्छ अबुध नर सोकहा,वृथा करतहै खेद२०

इति श्रीपरमभक्त कायस्थकुल तिलक कविवर
मुंशी (मनीषि) माधवरामजी विरचित श्री
शक्ति-भक्ति-प्रकाशे उपासनाभाव ब्रह्मरूप
निरूपणं नाम प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

॥ श्रीगिरिजायै नमः ॥

द्वितीयं प्रकरणम् ।

भक्त-माल ।

॥ मनहर ॥

कुल औ अकुल दोऊ मेलवे की रीतिजानें,
ताको नाम कौल शिव ग्रन्थनमैं गायो है ।
महानन्द मंगल प्रह्लादनन्द विश्वनाथ,
नन्द चिदानन्द ज्येष्ठनाथ हू बतायो है ॥
विश्वेश्वर पृथ्वीधर लघु विद्यारण्य पुनि,
नाम कुलाचार्य एते जग में कहायो है ।
ऐसो कौल पर्मधर्म ताके परें धर्म नाहिं,
तामें एते कौलकान पर्मपद पायो है ॥ १ ॥
तेरे जू अगम पन्थ तिरे हैं अनन्त सन्त,
तिन की तो नाम संख्या काहू ना गिनाईहै ।
ऐपें मरुदेश बीच जे जे सन्त तारे देवी,
तिन की तो भक्तमाल ऐसे जग गाई है ॥
रूपांदे रु मल्लिनाथ मेहवे विख्यात भये,
जाकी जात पर्सिबे कों दुनी सब आई है ।
बाबा श्रीगुसांई ताकी मैमा थल देश माहिं,
वाही के प्रसाद इन पर्म सिद्धि पाई है ॥ २ ॥

रामदेव धारू मेहो उगमसी रणसीहू,
हर्भू आदि साधु एते प्रेमभक्ति बीधे हैं ।
तोलादे जैसल कच्छदेश में कहाये पीर,
कुत्बदीन धीरशाह याही राह गीधे हैं ॥
केते नर नारी भोग मोक्ष अधिकारी भये,
केते हू सँसारी ऋद्धि सम्पत्ति में रीधे हैं ।
ऐसो असिधार पर्म गहन अपार पन्थ,
ताके मग लागि के अनन्त साध सीधे हैं ॥३॥

॥ दोहा ॥

तेरी गति अति अगम है, मो पैं कही न जाय ।
ब्रह्मादिक पावैं नहीं, नेतिनेति श्रुति गाय ॥४॥

इति श्रीपरमभक्त कायस्थकुलकलश कविवर
श्रीमुंशी (मनीषि) माधवरामजी विरचित
श्रीशक्तिभक्तिप्रकाशे भक्तमाल वर्णनं
नाम द्वितीयं प्रकरणम् ॥ २ ॥

श्री चामुंडायै नमः ।

। उपालम्भ ।

॥ मनहर ॥

जै जै बिन्दुनादिनी आह्लादिनी शिवादि सुर,
तेरे वर विष्णु संज्ञा पाई करतार की ।
तेरी ही कृपा तें लच्छि-पाति कच्छ-रूप धार,
रतन निकार खारी बारिधि की बार की ॥
तेरी ही कृपा तें हरि मच्छ औ बराह रूप,
पैठ के पताल बेद अवनी उधार की ।
खड्ग चक्रधारी देवी ! देवन की हितकारी !,
कहा धों विचारी जो हमारी बार बार की॥१॥

तेरे बरदान द्विज-राम वैसे काम कीन्हें,
राम सेतु बाँधी कपि लंका वार छार की ।
दीनन कों राज गज वाजि दै पयादन कों,
भक्तन की लाज सों जहाज पारावार की ॥
बन्धमोक्ष दैनी तू दया अरु कृपा की श्रेनी,
खल को कृपान पैनी तारन संसार की ।
मैं तो निराधार तातें टेरत हूँ बार बार,
कौंन धों अवार जो हमारी बार बार की॥२॥

तेरे भुज-दंडपर मंड ब्रहमंड की है,
कीर्ति कही मारकण्ड तेरे तत्त्व सार की।
महिष सो म्लेच्छ पल एक बीच पील डार्‌यो,
शेर पैं सवार भई देवन पुकार की ॥
धारे भुज बीस तामें खड्ग शूल आदि धारे,
मार्‌यो मधुकैटभ सो कथा विसतार की ।
धावत ही बार बार नाना रूप धार धार,
भई सुकुमार जो हमारी बार बार की ॥ ३ ॥

जगत साधार देवी रम्भा रूप धार्‌यो जबैं,
शुम्भ औ निशुम्भ मार सेना कों संहार की ।
चण्ड अरु मुण्ड दोऊ कीन्हें विनरुण्ड चण्डी,
कीर्ति नव-खण्ड बीच तेरे भुज चार की ॥
सरन साधारबे कों कीन्हों श्रम केती बार,
तनक भनक जब सुनी तें गुहार की।
कहै माधोराम जगदम्ब ! क्यों बिलम्ब अब,
कवनप्रकार तें हमारी बार बार की ॥ ४ ॥

दियो बरदान चित्रगुप्त कों उजैनी बीच,
पदम-पुरान में है कथा बिसतार की ।
मांडव को श्राप त्रयलोचनी ! बिमोच कीन्हों,
पाई है बडाई धर्मराज अधिकार की ॥
होय के प्रसन्न बरदेनी ऐसो बर दीन्हों,
तेरे बंस अंस पैं मुदार राजद्वार की ।
ऐसी भांति कायथ की कोमकों निवाजी तुम,
भई कहा सूम जो हमारी बार बार की ॥५॥
एक कोऊ कायथ माथुर अल कामिया हो,
तेरे बलिदान काज चोरी अजा पार की ।
ताके धनी आन घेर्यो तबें देवी नामटेर्यो,
तेरी ओर हेर्यो गही शर्न दरबारकी ।
भक्त रछपाल प्रतिपाल ततकाल तब,
बकरे की गाडर भवानी ! तिहिं बार की ।
ऐसी भांति लाज जन राखी तब राजरानी,
गई कौन काज जो हमारी बार बार की ॥६॥

रूपाँदे सु रानी जाकी जग में कहाँनी भई,
रावल हू मानी मन बात अविचार की ।
थार बीच खान पान ताके फूल पान करे,
मनो काम सरे पत राखी वह नार की ॥
जहाँ जहाँ भीर परी तहाँ तहाँ भीर करी
तूही जग तारन आधार निराधार की ।
रातदिन टेरी तोहू सुनी ना गुहार मेरी,
डारी का अँधारी जो हमारी बार बार की॥७॥
एक कोऊ वैश्य धनधारी अतिभारी तिन,
बारिधि में डारी ही जहाज भर भार की ।
टूटो बादबान तब भौंरनके झौंर बीच,
पौन की झकोर वाकी नौका मांझ धार की॥
हा! हा! जगदम्ब! ऐसो नाम ले पुकार्यो जब,
दयानिधि! बेग देकें बेरी वाकी पार की।
तब तो तू ऐसी दौरी अबें भई कहा बौरी,
करी कहा चोरी जो हमारी बार बार की ॥८॥

कष्ट दुःख भञ्जनी ओ खण्डनी दुरित द्वन्द्व,
सुरन के ओट जोट कौन से दातार की ।
आठ-सिद्धि नव-निधि छिन में बखासि देत,
रङ्क करें राव कछु बात न उधार की ॥
सागर की बात देश देशमें प्रसिद्ध भई,
टेरत ही धाई निज जनन बहारकी ।
देवि ! बहुनामी ! हम चाकर मुदामी तेरे,
परी कहा खामी जो हमारी बार बार की ॥९॥

ओसियाँ नगर बासी ब्राह्मण अचल नाम,
पर्योहो लाहौर बीच कैद कोटवारकी ।
सांची सिचियाय फुरमाय दयो भैरवकों,
काँधे लेके धायो राह गही मारवार की ॥
रैनकों उतार्यो ततकाल वाके ग्वार बीच,
दूर तें बताई ओर वाके घरबार की ।
तब शिवरानी ! हम जानी तू अयानी हीपैं,
भई का सयानी जो हमारी बार बार की॥१०॥

आयो हो हुसैनअली भई चलाचली अति,
सुधि नाँह रही कछु देश मारवार की।
खीमसी भँडारी ब्रतधारी जान्यो भूप तब,
दई परधानगी मुदार सिरकार की॥
देवी! तेरे जाप के प्रताप तैं भँडारी जब,
यवन निकार मेटी चिन्ता बर्ण चार की।
ऐसी महामाय इम भक्तन के आई भाय,
यहैं कौन न्याय जो हमारी बार बार की॥११॥

फतेसिंह कायथ भिवानी जोधनेर बासी,
सेवक परम तेरो अर्चा निराधार की।
साँभर नगर मध्य म्लेच्छन के हाथ पर्यो,
राख लियो देवी! तब दया बेशुमार की॥
खलनकी भच्छनी औ दीननकी रच्छनतियों,
टारन अकाल मृत्यु बिसम जुवार की।
शंभु-घर-नारी! औ गनेश-महतारी! कहा,
करी गुनैगारी जो हमारी बार बार की॥१२॥

सुन्योहै पुरानन में सन्तन के काज तुम,
देवी ! गिरिनन्दनी ! जू सिंह चढि धावती ।
रैवासा सों रमी सौनवाय हू कों तजी सुनी,
ओस्याँ हू तें भजी जानों ऐसी मन आवती ॥
साँभर तें सटकी त्यों भटकी फिरत कित,
फलोधी में होती तो तूँ कैसे अलसावती ।
सुँधा तें सिधाई औ पलाई खेजडला हू तें,
देश में जो होती तो हमारी बेर आवती॥१३॥

नग्रकोट बीच नाँहीं नाँहीं काँग्रुरा के माँहीं,
जानों हों सिधाई काहू ठौर मन भावती ।
धौलागिरि विन्ध्यागिरि हेमगिरि छाँड दयो,
मानों धाम कियो नयो जैसो चित चावती ॥
जे जे सिद्ध-पीठ तहाँ दीठ न परत कहूँ,
अन्तरिच्छ गच्छी मरुदेश में न पावती ।
चंडी जगमंडी गई जानी परखंड सही,
भर्तखंड होती तो हमारी बेर आवती ॥१४॥

तोकों भोग मोक्ष पर्म लोक ओक देनी सुनी,
यहैं बात सत्य है कि जग में कहानी है।
बेदन में बक्यो विधि शंकर हू आगम में,
ब्यास भिन्न भिन्न कै पुरान में बखानी है॥
आगम पुराण श्रुति समागम सर्ब मत,
शंकरी सुमुख ठौर मुक्ति ठहरानी है।
जोपैं सुख साता परमारथ की दाता होतो,
बंध-मोक्ष दीजे तूँतो पर्म मोक्ष दानी है॥१५॥

मोक्ष पद देनी स्वर्ग लोक की निसैनी अरु,
बीस भुजा तीन नैनी ऋषिन गिनाई है।
सुरन सहाई सुखदाई भक्त सन्तन की,
खल दल दलनी तू मुनिन बताई है॥
सुनि के बिरद मन उमगत मेरो नित,
कंटक की भक्षक रक्षक सरनाई है।
गज की सहाई मोपैं आनबनी महामाई !,
बंध ना छुडाई तो तूँ कैसी मोक्षदाई है॥१६॥

एरी माहामाय ! तो कों कहत दिवाय सोंह,
ऐसी भाँति कैबेवारो मोसो कोऊ दास ना ।
ले कर त्रिशूल निरमूल कीन्हें दैत्यन कों,
नहीं कोऊ ग्रन्थ जामें तेरो इतिहास ना ॥
बेद तो कों गाई सरनाई की सहाई तातें,
तेरी करें सेव आन देव बिसवास ना ।
मोसोदासखास जो न कैद सों खलास कीन्हों,
जगमें न तेरी कोऊ करेगो उपासना ॥१७॥

बेर बेर टेर टेर तेरी ओर हेरत हूँ,
इतनों अँधेर तेरे कोलों ठहरायगो ।
दीनन की सोध नाँहि सोध परबोध कहाँ,
कलि को चलन मनु तेरे मन भायगो ॥
मेरो कष्ट हरिबे कों करत बिलम्ब देवि !,
तोहि भक्तवत्सल यों कौंन जग गायगो ।
बन्ध मोक्ष मेरी जगदम्ब ! जो पैं करी नाँहि,
मेरी तो सहल पैं तिहारो बिर्द जायगो॥१८॥

॥ दोहा ॥

तब तो तनक गुहार सुन,
धावत ही जन काज ॥
अब तजिकैं मरुदेश मनु,
गईकैद भयभाज ॥ १९ ॥

इति श्रीपरम-शाम्भवी-भक्त कायस्थ-कुलावतंस
काव्यमानसमराल मुन्शी (मनीषि) माधव-
रामजी विरचित-शक्ति-भक्तिप्रकाशे
उपालम्भ-भाव वर्णनं नाम
तृतीयं प्रकरणम् ॥

॥ श्रीभगवत्यै नमः ॥

॥ करुणा रस भाव ॥

॥ कवित्त (मनहर) ॥

जुग जुग बीच जगरानी ! है कहानी तेरी,
करीहै सहाय सन्त लाखन हज़ार की ।
कहाँलों गिनाऊँ नाम जिन के जु पूरे काम,
बिगत बतावतहूँ निज उपकार की ॥
गिरी अधरात छात गह्यो हाथ मेरो मात !,
बलि बलिहारी मैं तो सरजनहार की ।
वैसी भाँति राख्यो हो तो अबहु बचायलीजे,
करिये बहार मेरे जनम सुधार की ॥ १ ॥
जब गुजरात बीच जवनन जंग समैं,
जैसी भाँति राख्योहुतो तैसें राखि लीजिये ।
साँभर की घात सो विख्यात सर्व लोकन में,
तेरी दया मया की विलोकन तें जीजिये ॥
तेरे बरदान की कथान कों पुरान कहैं,
येही बरदान जियदान देवी ! दीजिये ।
सौनबायराय ! हम कहत सुनाय तोहि,
वैसी भाँति आयके सहाय मेरी कीजिये ॥२॥

तेरे बसें बास औ उपासना हू तेरी हमें,
तूही सुखरास बिसवास आस तोरि ये ।
तेरे दास खास जान करें उपहास जग,
आस-पास बाँध आसपास जिन फेरिये ॥
बिघन बिनासनी ! प्रकासनी विमल बुद्धि !,
कंटक की नासनी ! ये सँकट निवेरिये ।
कहैं माधोराम तूँ अनाथन की नाथ देवी !,
कृपा की कटाक्ष सों हमारी ओर हेरिये ॥ ३॥
राखे देव दैत्यनसों बखान पुरान बीच,
सुन के कथान मन मेरो अभिलाखिये ।
राख्यो ब्रज मेह बीच पांडु लाखागेह बीच,
पक्षी-सुत घंटा तल ब्यासबैन साखिये ॥
ओर हू अनन्त सन्त राखे महा संकट तें,
है तो बात सत्य ये असत्य नाँहिं भाखिये ।
जैसी परतीत है जिहाँन बीच वाही रीत,
कृपा की कदम्ब जगदम्ब ! मोहि राखिये ॥४॥

॥ सवैया ॥

ब्याध रह्यो सर साँध तरैं रु,
सिचान भँवैं उड़िजान न पाई ।
ब्याध डस्यो अहि बान सिचानहि,
हे जगदम्ब ! मैं हूँ सरनाई ॥
कंटक रोकि रहे सगरी दिस,
टेरुँहुँ स्वामिकुमार की माई ! ।
राखिये मोहि अनाथ दया-निधि !,
मोपैं बनी चकवाकिसी आई ॥५॥

॥ कवित्त (मनहर) ॥

तेरे ही चरन की सरन जगदम्ब ! हमैं,
तोही मैं सुरत जैसे चातक कों घन की ।
तोसों लवलागी निसबासर रहत मेरी,
जैसे लव लोभी कों रहत नित धन की ॥
सुरतरु कामधेनु तूही निज सन्तन की,
सङ्कट-विनासिनी जू पूरो आस मन की ।
बेरी परी पाय त्रिपुराय ! है बिलम्ब काय?,
अँबे ! बेग आयके सहाय करो जन की ॥६॥

मैं तो महापापी आप थापी औ सुरापी हौं पें,
तू है पाप-मोचनी जू बिर्द ना बिसारिये।
छौरे ह्वै कपूत तो हू माता प्रतिपाल करैं,
दयानिधि ! करुणा कै ऐसी चित्त धारिये॥
तेरे ही कहावें और जाचबे कों कहाँ जावें,
बेर बेर पल पल तेरे पाँय परिये।
कहैं माधोराम कुर्सीबन्ध हैं गुलाम तेरे,
बेरी काट डारो मेरी बेरी पार करिये॥ ७॥

॥ सवैया ॥

मो पर ऐसि बनी जननी सुन,
कौन धनी बिन तोहि हमारो।
कै जिन बेर सुनो मम टेर,
कृपा कर लोचन-कोर निहारो॥
संकट की हरनी घरनी-शिव,
तोसो दयाल को? मोसो बिचारो।
श्री जगदम्ब ! कृपा कि कदम्ब !,
दया करिकें दुख-सिंधु ते तारो॥८॥

मात! भवानि ! चहूँ जुग जानि सो,
नेक दया करिकैं इत हेरो ।
राखिये जू अपनै सरनै जन,
द्वार जनेजन के जिन फेरो ॥
संकट दूर करो सब ही अब,
चामुँड ! हूँ तव चर्नन चेरो ।
श्री जगदम्ब !कृपा कि कदम्ब ! मैं,
तेरो हूँ तेरो हूँ तेरो हूँ तेरो ॥ ९ ॥

औंर की चाह न राखत हूँ कछु,
मोहि भरोसो है तेरो घनेरो ।
मेरो अली-मन को निसवासर,
तो पद-पंकज बीच बसेरो ॥
साँम की बेर यहैं गिरिनन्दिनि!,
संकट कों जगदम्ब ! निबेरो ।
बालक की प्रतिपालिका!कालिका!,
तेरो हूँ तेरो हूँ तेरो हूँ तेरो ॥१०॥

॥ कवित्त ॥

गुनैगार यद्यपि हज़ार तकसीर करी,
तोहू ख़ानेज़ाद चित चरनों बसतहै।
तू तो अघजालनी कपूत पूत पालनी है,
नाम के उच्चारे विघ्न कोटिक नसत है॥
देवी! परवीन! कहा मोसे दीन दुर्बल कों,
करिकें अधीन कोऊ ऐसें खसकत है।
मोपैं अति बीती तू है बैठी है नचती कहा,
काटि डारो संकट ये कंटक हसत है ॥११॥

एक ओर ब्याध सर-साँध लाग्यो घात बीच,
एक ओर भई गति पावक जरन की।
एक ओर स्वान मग रोक रह्यो भागवे को,
एक ओर जाल घात मृग के मरन की॥
पावक बुझाई घन स्वान स्यार धाये बन,
टूटो गुन जाल पौंन मोक्ष यों हिरन की।
वैसी भाँति मोहि कों बचायलीजे त्रिपुराय!,
गही है सरन अम्बे! रावरे चरन की ॥१२॥

वृद्ध भई देह खायबे कों नहिं गेह बीच,
होत अति पीर बवासीर को आज़ार हैं ।
प्यादे उनमादे सो तलब हेत देत दुख,
बिना रोज लीन्हें रोकें पानी औ अहार हैं ॥
सबैं आप स्वारथी न बात परमारथ की,
पाप के महारथी सो लोपी धर्म कार हैं ।
ऐसी जलाजंध अन्धाधुन्ध व्यवहार बीच,
बार बार मेरी जगदम्ब सों पुकार हैं ॥ १३ ॥

आगम पुरान श्रुति स्मृतियें श्रवण कीन्हे,
तिन में तो दाता माता तोही कों बतायो है।
महिमा अनन्त आदि मध्य अन्त तूही एक,
याही बिसवास तव चर्न शिर नायो है ॥
तू ही महा-विद्या विद्यारन सों प्रसन्न भई,
तेरी ही कृपा तें विद्यानगर बसायो है ।
मैं तो गुन पाठक हों फाटक कृपा की खोल,
जैसें कर्नाटक में हाटक बरसायो है॥ १४ ॥

काट्यो काहू खल बट तबैं उठ धाई झट,
कोप के निपट ऐसी चिन्ता चित खटकी ।
करिये सुरत औ बिसारिये न दीनन कों,
मोपर दुरित देखो कीन्ही अति कटकी ॥
जो जो मोपैं बीती सोतो जानत हो देवी! सबैं,
कहाँलौं गिनाऊँ तू है ज्ञाता घटघट की ।
कौन काज अटकी हो भटकी फिरत कित?,
आय के सहाय करो राय सिद्धबट की ॥१५॥

॥ सवैया ॥

बालपनैं प्रतिपाल करी हम,
जानि सही तुं ग़रीब निवाज़ है ।
तारुन मैं तन ताप हरी तुम,
मेल दये सबही सुख साज है ॥
भीर परैं जन पैं जननी जब,
होय दयाल सुधारत काज है ।
तैं जु निहाल कियो सब हाल में,
(अब) बृद्धपनैं हु की तोहि कों लाज है ॥१६॥

हारयो पुकार पुकारत हौं तुम,
कान धरो न कहा भई बोरी ।
ग्रीषम पावस सर्द हिमंत रु,
सीत हु बीतगई बरजोरी ॥
है महमन्त वसन्त को आगम,
खेलत कन्त सबैं मिल गोरी ।
देवि ! दयाकर दूर करो दुख,
आवत है अब दूसरी होरी ॥ १७ ॥

॥ कवित्त ॥

माया है अनन्त तेरी तेरो ही स्वरूप विश्व,
तू ही लोपा-मुद्रा वृन्दा तनया द्रुपद की ।
तू ही कलानिधि शची ब्राह्मी होय सृष्टि रची,
तू ही दैत्य दारनी अहारनी है मद की ॥
सन्त की सहाय माय! वैसी भाँति करो आय,
करी ही सहाय जैसे ग्राह तें दुरद की।
मेरे करतूतन की ओर जिन हेरो देवी !,
हेरिये जू ओर अम्बे! रावरे बिरद की ॥१८॥

हमें तुम्हें नातो ताको राखलीजे ताँतो देवि !,
करिये न नाँ तो बात यही चित धारनी ।
मैं तो हूँ अधम पाप-कर्म ही को कारक हूँ,
तू है पाप-हारनी औ अधम-उधारनी ॥
मैं तो हूँ अधम मग्न बिपतीके बारिधि में,
तू है दाता सम्पत की बिपत बिदारनी ।
मैं हूँ महाधूत औ कपूत-पूत पूतन में
तू ही तात मात है भवानी ! भव-तारनी ॥१९॥
सो ही भूप धर्म-रूप दीन दया चित्त धारै
एही रीति नीति वेद स्मृतिन कथा की है ।
मन्त्री सतवादी बैठें राजस की गादी तब,
दीनन की सोध राखें ये ही रीति वाकी है ॥
लीक दोय न्याय की है सो तो नष्ट भई लखी,
कैसें जियें दीन जीव बस्यो आय नाकी है ।
तातें तोहि ताकी तूँ हैं नउका कृपा की देवि !,
दयां-निधी! एक तेरी दया लीक बाकीहै॥२०॥

भक्तन की पालिका भवानी महा कालिका जु,
जुग जुग अन्त तें अनन्त कृपा कीनी हैं।
भई अनावृष्टि तबैं कन्द साक पोषी सृष्टि,
साकम्भरी खरी इहिं भाँति दया चीनी हैं॥
सुरन की नेक जब श्रवन में घोर परी,
करुणा निधान कैसी करुना में भीनी हैं।
बन्ध-मोक्ष देबो जगदम्ब ! है कितीक बात,
तैं तो वैश्य सुरथ कौं भक्ति मुक्ति दीनी हैं॥२१॥

दिल्ली बीच चाकरी करी सो पाई काँकरी ना,
चाकरीहु मैंनत ओ घर बरबाद है।
चुगल औ चारन को भयो अधिकार अति,
भये इतबार बिन जेते खानाज़ाद है॥
आछे आछे काम कीन्हें साह पास दाम लीन्हें,
साँम–धर्म चीन्हें पैं न पाई कछु दाद है।
एते पर पाय बेरी डारी तब तोहि टेरी,
एरी जगदम्ब ! मेरी तो सौं फरियाद है॥२२॥

भयो बर्स साठको मैं भोजन अछूत भख्यो,
सो अब छुवत अन्न अन्त्यज चँडाल है।
खट-पदी खटमल खाएजात देह अरु,
न्हायबे को जोग नांहि बढे तन बाल है॥
छूटत है हिम्मत विपत घर घेर रही,
मेरे तेरो नाम सो ही सदा धन माल है।
कृपा की कदम्ब! जगदम्ब! क्यों विलम्ब कीजे,
बन्ध-मोक्ष दीजे देखो मोपैं ऐसो हाल है ॥२३॥
दम्भी महा क्रूर अति दूर साधु संगत तैं,
जानत न तप नेम नाम को न जापी हौं।
कबू धर्मशाला औ देवाला मैं न कथा सुनी,
मिथ्या वादी धूत दूत ठग को मिलापी हौं॥
लालची लबार मद क्रोध अहँकार भर्यो,
चित के चहत चल्यो ऐसो आपथापी हौं।
एपैं जगदम्ब! तेरे चर्न अवलम्ब रह्यो,
तू तो पापमोचनी है जो मैं महापापी हौं॥२४॥

॥ छन्द मौक्तिक दाम ॥

अहो जग-तात ! सुनो जन बात ।
अहो जगदम्ब ! करो न बिलम्ब॥
अहो मुनि गावत तोहि दयाल ।
कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल ॥ २५ ॥
भवानि ! तुही भवतारन सन्त ।
सु गावत ईश हरी इक-दन्त ॥
दया कर देवि ! गहो मम हाथ ।
अनाथ अनाथ अनाथ अनाथ ॥ २६ ॥
बिना पय ज्यों मुरझावत मीन ।
दया-निधि ! तूहि उधारन दीन ॥
भयो अति संकट तैं तन छीन ।
अधीन अधीन अधीन अधीन ॥ २७ ॥
अहो जगदम्ब ! सुनो जन टेर ।
बिना धन मोहि रहे खल घेर ॥
करैं यहँ कोउ न न्याय निवेर ।
अँधेर अँधेर अँधेर अँधेर ॥ २८ ॥

सदा उठि माँगत प्यादे हि रोज ।
नहीं धन गाँठ युँ आवत रोज ॥
सु कौंन धनी जननी बिन आहि ।
तिराहि तिराहि तिराहि तिराहि ॥ २९ ॥
दया-निधि ! दीननकी सुख-धाम ! ।
न जानत हो जन के जु विराम ? ॥
करें दुख भौंनतें कौंन अज़ाद ।
फिराद फिराद फिराद फिराद ॥ ३० ॥
इँ देश महा उपज्यो अनरत्थ ।
तुहीं जन राखन कौं समरत्थ ॥
प्रज्वल्लित देखि अन्यायकी लाय ।
बचाय बचाय बचाय बचाय ॥ ३१ ॥
सुदेख लये सब ही नर देव ।
करी उन की नित ही अति सेव ॥
बिना तव कौंन धनी सुरराय ! ।
सहाय सहाय सहाय सहाय ॥ ३२ ॥

॥ छन्द अर्द्धभुजङ्गी ॥

अहो देवि ! दाता । तुही विश्व–माता ॥
सदा ही सँतोखैं । करो बन्ध मोखैं ॥ ३३ ॥
तुही सन्त तारै । विपत्ती निवारै ॥
तुही भर्ण पोखैं । करो बन्ध मोखैं ॥३४॥
दया–दृष्टि–हेरो । दुरित सौं निवेरो ॥
भरो मोज जोखैं । करो बन्ध मोखैं ॥ ३५॥
दुखी दीन भारी । सरन हूँ तिहारी ॥
हरो कष्ट दोखैं । करो बन्ध मोखैं ॥ ३६ ॥
तुम्हैं सीस धारैं । सु का सौं पुकारैं ॥
सदा नाम घोखैं । करो बन्ध मोखैं ॥३७॥
मुझे आस तेरी । करो पार बेरी ॥
परूँ नाहिं धोखैं । करो बन्ध मोखैं ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

भक्त-बछ्छल है बिरद तुव,
बेद पुरानन साख ॥
अवलंब्यो तेरे चरन,
ज्यों चाहै त्यों राख ॥ ३९ ॥

इति श्रीभगवती जगदम्ब-पदाम्बुजावलम्ब-
कलिकराल-सागर-तारित-कीर्ति-कलेवर,
कायस्थ-कुल-गौरव मुन्शी (मनीषि)
माधवरामजी विनिर्मित शक्ति-भक्ति-
प्रकाशे करुणा रस निरूपणं
नाम चतुर्थ प्रकरणम् ।

॥ श्रीदुर्गायै नमः ॥

॥ मनः शिक्षा ॥

॥ मनहर छन्द ॥

जाके सुर सरन औ बन्दतचरन मुनि,
निगम हुँ नाँहि गम वाके नर नारी की ।
खग-पत्ति बैलपति गजपति मोरपति,
गावैं पैं न पावैं गति जग-महतारी की ॥
एरे मन ! बौरे ! मेरे काहे कौं उदास होत,
धरै क्यों न आस अम्बे दास सुखकारी की ।
दोय-भुज-वारो नरसरन बचाय लेत,
गही है सरन मैं तो बीस-भुज वारी की॥१॥
देवी दया-सिंधु ! तेरी इच्छा भक्त-रच्छाकीहै,
या मैं ज्रे सँदेह मानैं तेही तो अज्ञानी हैं ।
भूत औ भविष्यत बरतमान तीनौं काल,
तेरे ही स्वरूप तत्त्व ऐसैं उर आनी हैं ॥
जोगिनी नगर पर उपद्रव लख्यो तातैं,
कैद मिस सन्त देश लायबे की ठाँनी हैं ।
एरे मन! बौरे तूँ संकल्प औ बिकल्प तज,
लाज तेरे काज की तो अम्बे राजरानीहैं ॥२॥

दैत्य-रक्त-सोखनी औ पोखनी सकल-विश्व,
मेरे अघ-पुञ्जनको तो बिन को जारि हैं।
गो मैं अपराधी प्रेम-लच्छना न भक्ति साधी,
लोचन कृपा की कोर मोहि कौं निहारि हैं॥
तू तो भक्तवच्छल त्यूँ दीननकी रच्छक है,
ये ही मोहि आसरो विरद चित धारि हैं।
अहा ! जगदम्ब !तू है कृपा की कदम्ब तातैं,
जानतहूँ मोहि भवसागर तैं तारि हैं ॥ ३ ॥
यही है उपाव जगदम्ब की सरन आव,
गावत निगम वाको दया को सुभाव रे।
नेक जु कृपा की अवलोकन निहाल करैं,
ऋद्धि सिद्धि देत रु करत रंक राव रे॥
जन जन जांचवे की बान तज वाको भज,
ध्यान पद-कञ्ज धर बन्यो नीको दाव रे।
नरन सौं बोल बोल खोत कहा मोल तोल,
होत कहा डाँमाडोल मेरे मन ! बावरे ! ॥४॥

जैसे मीन नीर बाल क्षीर पीरवारो वैद,
चंद हुँ चकोर घन चातक रहैं चहैं।
चन्दन उरग अलि पँकज औ कञ्ज रवि,
दीपक पतंग अंग चाहत सदा दहैं॥
चुम्बक कों लोह मोह मृग कौं सुराग बीन,
कामिनीकौं कन्त धन निर्धन सदा लहैं।
मोर घन घोर चहैं सीप स्वाति ओर जैसे,
तैसे मन मेरो तेरे चरन सदा रहैं॥ ५॥
दीननदयाल प्रतिपाल निज सन्तन की,
करत निहाल दूजो दाता कौंन तोसो है।
काम क्रोध लोभ मोह मद मैं मगन सदा,
महा शठ क्रूर अपराधी कौंन मोसो है॥
मेरे कर्म घोर जन्म जन्म केहैं कोर कोर,
कहाँ लौं गिनाऊँ यह दफ्तर घनो सो है।
शंकर की रानी! ठकुरानी! तीन-लोक-मानी,
अम्बिका! भवानी! तेरी कृपाको भरोसो है६॥

शिवजूकी रानी ! जगजानी ! हम भली विधि,
निश्चै करिमानी तेरे दयाके सुभाय की ।
आये खल टोल मिल दहन जुगनपुर,
लियोहै बचाय पत राखी सरनाय की ॥
दुष्टन कौं कष्ट मगहीन बिन दृष्टि कीने,
कंटक विदारनी तूँ टारन बलाय की ।
देवी ! दीन-रच्छनी ! तो बिन ऐसी कौंन करैं,
दिल्ली बीच जैसे देवीदासकी सहाय की ॥७॥

तेरो सन्त जान्यो तातें हठ परयोरॉनो क्योंकि,
काहू अनाचारी मूढ़ वाकी चारी खाई ही ।
एक दिन आय वासौं कह्यो सतराय माय,
सिद्धिदिखराय तेरी भक्ति सरसाई ही ॥
झट पट लेत नाम खुलिगे कपाट धाम,
देकर दरसदास महिमा बढाई ही ।
वाही भाँति आय जगदम्ब ! मेरी पत राखो,
बीदा वरदाई की बुलाई जैसैं आई ही ॥८॥

कारज औ कारन तूँ बिश्व बिसतारन हैं,
अखिलकी पालक तूँ ज्योति चिदानन्द की।
तूही गति तूही माति तूही सुख सम्पति हैं,
बिपति विहंडनी तूँ बल्ली है आनन्द की।
तेरे गुन गायबेकौं विधि हू समर्थ नाहिं,
कहा गति रसना है मेरी मति-मन्द की।
भक्तनकी पत राखी ताके सुने गीत साखी,
राखी पत मेरताके बासी कवि बृन्द की ॥९॥

। सवैया ।

खलु जानत हूँ परताप जु जाप को,
पाप सन्ताप हरैं हि हरैं।
जगकी जननी जग पालक है सु,
कपूत को पेट भरैं हि भरैं ॥
सब नाम लियैं परिणाम लहैं सुख,
संकट व्याधि टरैं हि टरैं।
चित चाह यही गुन गावत हौं नित,
अम्बा सहाय करैं हि करैं ॥१०॥

। कवित्त ।

अम्बे ! तेरे नाम को अधार नित मेरे एक,
तातैं तेरे नाम कौं जपत साँझ प्रात हौं।
मेरे तेरे नाम हू को जीवन जगत मात,
चिंतामनि सुर तरु हू तैं अधिकात हौं ॥
तेरे ये सरोरुह से मुख सुखमा की सुधा,
मधुप ज्यौं मग्न ह्वै कैं पी पी ना अघात हौं ।
मेरे एक तेरो ज़ोर और की न चाह धरौं,
मोकौं दुख देवैं ताकौं तोही कौं बतात हौं॥११॥

। सवैया ।

पुरानन ऐसो बखान सुन्यो सु,
अदेव बिडार सुरौं सुख दीनौं ।
वीते किते युग तातैं प्रतीत न,
है मन मेरो महा भ्रम भीनो ॥
मिटै भ्रम जाल खुसाल भयो यह,
देख्यो है चित्र विचित्र नवीनौं।
जान्यो संदेह बिना खलु धाय कै,
देवि ! तुम्ही बध बध्यन कीनौं॥१२॥

॥ दोहा ॥

सीप स्वाति पंकज रवी,
ज्यौं घन कौं पिक मोर ।
मोहि आस त्रिपुराय ! तुव,
जैसे चन्द चकोर ॥ १३ ॥

इति श्रीपरम शक्ति-भक्त, विविध-विद्याविभूषित, परमधीर, कायस्थ–कुल–मण्डन मुन्शी (मनीषि) माधवरामजी विनिर्मित शक्ति-भक्तिप्रकाशे भक्तिदृढताप्रतिपादनं नाम पञ्चमं प्रकरणम् ।

। ॐकालिकायै नमः ।

॥ वीररस भाव ॥

। कवित्त ।

जब जब अवनी मैं असुर उद्योत भये
ह्वै कर प्रकट अम्बे सुरन सहाय की ।
प्रगटे मरट्ठे कलि दानव को रूप धारि,
पीर उपजावत हैं प्रजा कौं अन्याय की ॥
तस्कर के भेस देस देस पेसकसी लेत,
दिल्ली हू दहल्ली एती सुनी ज्यौं अवाय की ।
दुष्टन का मुष्ट मार नष्ट करडारो देवी!,
माजी ! बाँझी करी बाजी पाजी बाजे रायकी १॥
गुर्जर नगर बीच ह्वै के मगरूर बैठो,
साह कौं न मानैं ऐसी दसा सर्बिलंद की ।
पारथ महारथीसे बीर मिले भारथमें,
संख्या को गिनायसकै फोजनके वृन्दकी ॥
जुरी दोउ अनी रज छाय लयो अम्बर कौं,
प्रभा प्रभाकर की तिमिर तहाँ मन्द की ।
सुनके अवाई नग्र-कोट ही सौं धाई माई,
आई ही मदद अभमाल अजनन्द की ॥२॥

तब शिव-दूती ! तुम सेर पैं सवार होय,
शुम्भ औ निशुम्भ कौं बिडारे इक तालमैं ।
मर्दन तैं कीन्हौं मधुकैटभ महिस हू को,
लीन्हैं चण्ड मुण्ड देवी ! वदन कराल मैं ॥
छिनकमैं धूम्रनैन धूरमैं मिलाय दीनौं,
रक्तबीज रक्तपान कीनौं ततकाल मैं ।
कली खल मारबे कौं फिरै काहि ऐंठी ऐंठी,
कन्दरा मैं बैठी किधौं पैठी हो पताल मैं॥३॥
सिंह भयो नष्ट ? अष्ट-भुज का अनायुध हैं?,
कीनौं कहा श्रम जातैं अंग अलसाती हो ?।
भैरव कराल बिकराल अति कालका ! जू,
तो कौं तजि भाज्यो जानौं तातैं अनखातीहो॥
प्रजा भई पीडित न ताकी पीड़ हरत जु,
कानन मैं रूई दई किधौं मदमाती हो ।
देखती हो खल मिल देत दुख दीननकौं,
तोउ न उदित होत गई किये जाती हो ॥४॥

सवैया ।

जैसैं हन्यो मधुकैटभ कौं,
महिषासुर कौं कियो सिंहको चारो।
धूमरलोचन चण्ड रु मुण्ड कौं,
देवि दिखाय दियो जमद्वारो ॥
चाबगई रक्तासुर कौं पुनि,
शुम्भ निशुम्भ महा बलवारो।
श्री जगदम्ब बिलम्ब करो जिन,
दुष्टन को उँहिं भाँति पछारो॥ ५॥
संत सहाय करी मँहमाय,
हने बहु दैतन के दल जाडा।
मेरिहु बेर करो न अबेर,
करौं बिनती कबहूँकहि ठाडा ॥
तारन बिर्द कौं धारत हो कि,
तुम्ही वह बिर्द सबैं अब छाडा।
आज भई मतवारि घनी कि,
दये दोउ कुंडल कानन आडा ॥ ६ ॥

कवित्त ।

देवन के काज कौं मुदित ह्वै उदित भई,
ब्याहकी प्रतिज्ञा लई वैसो ठाट ठाटिये ।
सत्ययुग द्वापर त्यों त्रेता मैं असुर हने,
वैसे कलिकाल हू के खलन कौं डाटिये ॥
कीनौं हुतो रक्तबीज रक्त हू को पान तब,
दुष्ट जन दानव को रक्त वैसे चाटिये ।
देवन की देवी ! तूँ अदेवन सौं मोक्ष देनी,
मोसे दीन अन्ध हू के फंद वैसे काटिये॥७॥
तेरे ही प्रताप कृष्ण इन्द्र कोप कीन्हौं जब,
गऊ गोप ग्वाल राखे ओट दै पहार की ।
तेरो बर पायकैं जिताय पंच पाण्डुन कौं,
शक्ति दई देवी ! तुम लीलन अँगार की ॥
बकी बक ब्याल बच्छकाल शिशुपाल कँस,
बिदूरथ बिदार्‌यो तैं गदा परहार की ।
कबू नर नारि रूप धारिकैं मलेच्छ मारे,
काहे दुष्टमारबेकौं बार इँहिं बार की ॥ ८ ॥

सवैया ।

दीनन की बिनती सुनिये,
जगदम्ब ! तुही मनसा जन पूरन ।
कंटक चार लबार किते नृप,
कौंन लगे तातैं लागेहैं घूरन ॥
दुष्ट महा उपजावत कष्ट सु,
दीन अधीन लगेहैं बिसूरन ।
चामुंड ! चार भुजा धर आयुध,
चण्डन कौं कर डारिये चूरन ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

बीस भुजा आयुध धरैं,
राखैं सिंह बनाय ।
भीर परैं जन कौं तबैं,
ह्वै सहाय सुरराय ॥ १० ॥

इति श्री खल-दल-खण्डि-चामुण्डि-समाराधनकुशल धीर-बीर-वर, कायस्थ-कुल-कुवलय विभाकर, मुंशी (मनीषि) माधवरामजीकृत शक्ति भक्तिप्रकाशे वीररसभाववर्णनं नाम षष्ठप्रकरणं समाप्तम् ॥ ६ ॥

। ॐ बरवासिन्यै नमः ।

। कुलदेवीविश्वास भावः ।

। मनहर ।

औरा मैं बिराजै छबि छाजै औ निवाजै सन्त,
माती मद गाजै ऐसी राजै सिंह-आसनी ।
ज्वालामुखी जालपा सु कालिका सुमुख रूप,
भक्तन की पालिका है कंटक की नासनी ॥
जन मन रञ्जन अगौनी भव भञ्जन है,
गंजन दुसह दुख दुष्ट रक्त प्यासनी ।
कायथ बरन कों शरनहै चरन जाके,
वही माधोराम की अधार बरवासनी ॥ १ ॥
थाँन है प्रसिद्ध सिद्ध-पीठ बन्यो मेड़ता मैं,
परसैं अनँद घन बरसैं अपार है ।
आवैं साँझ प्रात नवरात मैं छतीस जात,
पावैं मनबाञ्छित सो गावत संसार है ॥
पोखन भरन काल कंटक हरन देवि,
अवलम्बे चरन जे बरन ककार है ।
कहैं माधोराम मोहि आस बरवासनी की,
मेरे थाँनवाली मतवाली को अधार है ॥ २ ॥

जिन महँमाय माँन ठाकुर को मेड़तामैं,
दियो बरदान सनमान सब लायकी।
बहुरि गोपाल पैं दयाल ह्वै निहाल कियो,
कँानूगोई दई तातैं भई कुल नायकी॥
पीछे केशोदास जोगीदास हू की आस पूरी,
बृद्धि करी सन्तति औ कीर्ति जस आय की।
कहै माधोराम सन्तों! जपो आठौं जाम ताहि,
करैगी सहाय माय राय सौनवाय की॥३॥
प्रथम कृसान कर्म ताकौं कर छुवैं नाँहि,
दूजो बानिज तातैं धरैं न कछु तालका।
पढन लिखन सेवा कर्म जो अद्यापि हुतो,
ता मैं तो सरीक हुए जातहैं बकालका॥
एरी महँमाय! तूँ सहाय है हमारी तातैं,
कहूँहूँ सुनाय तोसौं जो है भेद हालका।
तूँ है प्रतिपालका औ दाता धन मालका तूँ,
कायथ के बालका की राखो लाज कालका॥४॥

मानक चुहाँन हू को कीनौं परधान तातैं,
मानकभँडारी क्यौंक भई अति लायकी।
अस्सी चार अह्ल वीच पाईहै बड़ाई बहु,
भूमि अधिकाई सत्ता पाई काज राय की॥
ठौर ठौर सन्तन को संकट निवेर दियो,
कैत हूँ निवेरो जू दुहाई तेरे पाय की
बिरद विचारो दुख-सिन्धु तैं उतारो पार,
आसरो तिहारो जगदम्ब! देवी! नायकी! ॥५॥
देवी! मेरे तोहि बिन नाँहीं कोऊ आसरोहै,
तातैं बेर बेर टेर तेरी ओर हैरवी
तो कौं दाता सखी हम लखी भली भाँति अम्बा!
भक्तन के हेत तुम भखी सेना कैरवी॥
सन्तन सहाय माय! ठौर ठौर करी हुती,
वैसी भाँति अम्बे! अब करो क्यौं न पैरवी।
तेरे सन्त साधुन को कोऊ दुःख देवैं ताकौं,
दरबर दोर कर भखि जाओ भैरवी॥६॥

सवैया ।

मेड़तवालन की प्रति पालनि,
कंटक जाल जँजाल हरैगी।
धारत हैं ब्रत तारन सन्तन,
भीर परैं जन कैसे टरैगी॥
रे मन ! बौरे ! निहोरे कहा नर,
तेरी वही चित चिन्त धरैगी।
वाहिकौं ध्याय उपाय न ओर है,
पाण्डवराय सहाय करैगी॥ ७॥

कवित्त ।

आगैं तो मल्हार मारवार बीच आयो जब,
तब तो बचाय लियो सन्तन समाज कौं।
भक्तन पैं भीर परै नेकन विलम्ब कियो,
दोर आई दरबर सुनत अवाज कौं॥
कायथ वरन सब तेरे ही सरन सदा,
तोहि को गिनाई है सहाई राज काज कौं।
जन्म जन्म हीको तेरो चेरो हौं नवेरो दुख,
लाज है हमारी महँमाई हिंगलाज कौं॥८॥

एरी जगरानी ! बरदानी तू मुलक मानी,
सुनिये अरज इन खानाजाद खासा की ।
तू ही जगदम्ब हम चर्न अवलम्ब रहे,
करो क्यों विलम्ब यह बेर न तमासा की ॥
तेरे दास खास पुनि तेरे ही बसत बास,
तेरो बिसवास आस तेरी ये दिलासा की ।
संकट हरन सुख संपति करन देवी !,
करिये सहाय मेरी राय जू रैवासा की ॥९॥

दोहा ।

अम्बे ! तव पद-कमल मैं,
सदा रहै मम ध्यान ।
जन्म जन्म तेरी भगति,
यहि माँगू वरदान ॥ १० ॥

इति श्रीकायस्थ-कुल-मुकुंदानन्द-चन्द, श्रीभग-
वतिबरवासिनि–पदारबिन्द–भक्ति–मकरन्द–
मत्त-मलिन्द, मुन्शी (मनीषि) माधवराम
जी गुञ्जरित शक्ति--भक्ति प्रकाशे कुल-
देव्याः विश्वासभाववर्णनं नाम
सप्तमं प्रकरणं समाप्तम् ।

। ॐसर्वमङ्गलायै नमः ।

। प्रार्थना ।

।सवैया।

जग-विघ्न-बिनाशककी जननी,
तुम हो अरधांगिनि शंकर की ।
अब और पुकार कहा कहिये,
तुम जानत हो घट अन्तर की ॥
मुहि पैं सुदया तुम ऐसि करी,
बिपदा जु हरी लोह-लंगर की ।
द्रुत बन्धन-मोक्ष कर्‌यो जगदम्ब जु,
और चित्यो इन किंकर की ॥ १ ॥

छन्द भुजङ्गप्रयात ।

नमो ज्योति-रूपा ! नमो विश्व–माता ! ।
नमो जगत-कारन् ! नमो विश्व–ताता ! ॥
नमो ब्रह्म-विद्या ! नमो वेद–बानी ! ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ! ॥ २ ॥

तुही योग-निद्रा तुही योग-युक्ता ।
तुही अम्बिका कालिका भोग मुक्ता ॥
तुही पौन आकास भू तेज पानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥ ३ ॥
तुही वैष्णवी नारसिंही सुरेसी ।
तुही घोर-रूपा तुही मुक्त-केसी ॥
तुही पर्म-गुह्या तुही सर्व जानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ! ॥ ४ ॥
तुही दैत्य दानूँ तुही देव बर्दा ।
तुही पद्म-आसन् तुही पर्मपर्दा ॥
तुही पर्म शक्ती परापर बखानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ! ॥५॥
तुही मर्दि-भैंसा तुही शम्भु-तीया।
तुही पर्मसिद्धा तुही है तुरीया ॥
तुही धर्म कामार्थ औ मोक्षदानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥ ६ ॥

तुही राधिका साधिका सर्व कामा ।
तुही रुक्मिणी देवकी सत्यभामा ॥
तुही मोहिनी रोहिनी नन्दरानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ! ॥ ७ ॥
तुही सारदा बारदा रूप भासै ।
तुही बिश्व पालै तुही बिश्व ग्रासै ॥
तुही दानवी मानवी देवज्ञानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ! ॥ ८ ॥
तुही सृष्टि-कर्त्ता तुही कष्ट--हारी ।
तुही बृद्ध यूवान कन्या कुमारी ॥
तुही लक्ष्मि रूपा तुही राजरानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ! ॥ ९ ॥
तुही भानवी तेज-रूपा प्रकासी ।
तुही शंकरी गौरि कैलासबासी ॥
तुही जाह्नवी-रूप भो पाप-हानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ! ॥ १० ॥

तुही कामिनी ब्राह्मनी बेद-बाची ।
तुही आसुरी किन्नरी औ पिसाची ॥
तुही बैल-बाही तुही शूल-पानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी! ॥११॥
तुही भक्त-बत्सल तुही सन्त-तारी ।
सबै बिघ्न बाधादि संकट निवारी ॥
तुही सर्ब-ब्यापी सबै लोक मानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी! ॥१२॥
जपै दोय कर जोरिके दास माधो ।
करो नेह-दृष्टी हरो कष्ट बाधो ॥
गही सर्न तेरी दया ठौर ठानी ।
सदा जै सदा जै सदा जै भवानी! ॥१३॥

कवित्त—मेरी चित्त-वृत्ति निज चर्नन मैं राखो
नित, दीजिये सुभक्ति पाप कर्म तैं डर्यो रहूँ ।
होय कैं कृपाल मोह-जाल तैं निवेरो देवि !,
पाय कैं विवेक ज्ञान ध्यान मैं भर्यो रहूँ ॥
क्रोध लोभ मच्छर के अच्छर समेट डारो,
जगत-जँजाल-इन्द्र-जाल तैं टर्यो रहूँ ।
टेरत हूँ बार बार फेरो जिन द्वार द्वार
येही उपचार तेरी पौर पैं पर्यो रहूँ ॥ १४ ॥

। सवैया ।

पूजन पाठ को ठाठ न जानत,
साठ घरी सठ-पाठ पढ़े हैं ।
जाप अलाप सँलाप न आवत,
पापन के अति पुञ्ज बढ़े हैं ॥
प्रान-अयाम औ न्यास मुद्रादिक,
ध्यान समाधि मैं नाहिं मढ़े हैं ।
जानों ज्यौं पार उतारो दया-निधि,
देवी ! तिहारि जहाज़ चढ़े हैं ॥ १५ ॥

। कवित्त ।

जो जो बैन भाखत हूँ ता को जाप जानो देवि!
कर की क्रिया हैं जेती मुद्रा पहिचानियो ।
चर्नन सौं चालत हौं सो ही परदाच्छिना है,
भोजन करत ताकौं हवन हि जानियो ॥
सैन जो करत ताहि दण्डवत बूझियेजू,
नैनन सौं देखूँ सो ही दर्स चित आनियो
अन्तर बहिर जे जे कर्म कहे इंद्रियन,
ते ते पूजा यजन अध्यैन कर मानियो ॥ १६॥

भक्ति नवधा की धुर जानत न एको रीति,
दूजी प्रेम लच्छना कौं नेक न पिछानौं हौं ।
तीजी पराभक्ति ताको बेदहू न जानैं भेद,
मन तो मलीन तामैं कैसी भाँति आनौं हौं ॥
भक्ति-योग सांख्य-योग हठ-योग तीन कहे,
तामैं एक हू को अंग चित मैं न ठानौं हौं ।
जानत न तत्त्व-ज्ञान बूझत न प्रानापान,
अम्बे! अम्बे! अम्बे! एक तेरो नाम जानौं हौं २७॥

॥ दोहा ॥

कविताई जानत नहीं,
पिंगल के अनुसार ।
बिथा कही निज मात सौं,
जोहे जगतअधार ॥ १८ ॥
तरुन कहा बालक कहा,
कहा बृद्ध मति धीर ।
मैया मैया कहत हैं,
जबैं होत तन पीर ॥ १९ ॥

मैं हूँ अपनी मात सौं,
बेदन कही बनाय ।
कहा होय नरसौं कहे,
अम्बा करत सहाय ॥२०॥
पूतन बीच कपूत पर,
होत हेत अति मात ।
सदा पोस पालन करत,
कथा जगत विख्यात ॥२१॥
नाम धर्यो या ग्रँथ को,
"शक्ती–भक्ति–प्रकाश" ।
हेत प्रीति सौं जो पढ़ैं,
ताकी पूरैं आस ॥ २२ ॥
शक्ती-भक्ति-प्रकाश कौं,
श्रवण करैं चित लाय ।
संकट कट बाधा मिटैं,
पाप प्रलय ह्वै जाय ॥ २३ ॥

शक्ती-भक्ति-प्रकाश को,
ध्यान लगाय त्रिकाल ।
पाठ करैं एकाग्र-चित,
कष्ट मिटै दर हाल ॥२४॥
ग्रंथकार कायस्थ कुल,
मुन्शी माधोराम ।
माथुर अल उतरेलिया,
नगर मेड़ते धाम ॥ २५ ॥

इति श्रीमत्स्तुति–भक्ति–शक्तिप्रकटित–शक्ति–
शक्ति–ग्रहीत–बन्धन–मुक्ति, कायस्थ–कुल–
कलश, मुन्शी (मनीषि) माधवरामजी
विरचित शक्ति–भक्ति–प्रकाशे
प्रार्थनाभाववर्णनं नाम
अष्टमं प्रकरणं
समाप्तम् ॥

श्रीकृष्णाय नमः ॥

करुणाबत्तीसी ।

मनहर ।

गिरि कौं उठाय ब्रज गोप कौं बचाय लियो,
अनल उबारयो पुनि बालक मँजारी को ।
गज की अरज सुनि ग्राह तैं छुड़ाय दियो,
राख्यो ब्रत नेम धर्म्म पांडव की नारी को ॥
राख्यो गज-घण्टा तल बालक बिहङ्गम को,
राख्यो प्रन भारत में भीष्म ब्रह्मचारी को ।
त्रेधा ताप हारी निज सन्तन के सुख कारी,
मोहि तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारी को॥१॥
कमला-निवास निज दासन की पूरैं आस,
ताके बिसवास बिष भख्यो मीराँ बाई है ।
केसव कमल-नैन सन्तन करन चैन,
सैन हित भये भूप मञ्जन कौं नाई है ॥
इन्द्रजू को हर्यो मान सुदामा कौं दयो दान,
भक्त जान छाँन नामदेव जू की छाई है ।
नन्द के कन्हाई निज सन्तन कौं सुखदाई,
भाई बलदेव जू के हमारे सहाई है ॥ २ ॥

जैसे खग-बालक कौं राखि लियो घण्टा तल,
लाखा-गेह बीच राख्यो पांडव के साथ कौं ।
राखिलियो प्रीछत कौं माता के उदर माँहि,
राखे ग्वाल-बाल गिरि धार्‍यो निज हाथ कौं॥
पारथ के स्वारथ कौं सारथी भये हो प्रभु,
सखा निज जानि कैं जितायो है भाराथ कौं।
पावक प्रजारी तहाँ राखी तैं मंजारी कौंजु,
वैसी भाँत राखो नाथ! मोसे हू अनाथ कौं॥३॥
काहू के आधार सेवा बनिज ब्योपार को है,
काहू के आधार खेत बित्त थित गाम को ।
काहू के आधार बिद्या बुध बल बाँह को है,
काहू के आधार हाथी घोरे धन धाम को ॥
काहू के आधार हैंजू तात मात बन्धव को,
काहू के आधार यह सार निज बाम को ।
मैं तो निराधार मेरी हरिही करेंगे पार,
मेरे तो आधार एक कोरो हरि नाम को ॥ ४ ॥

केते कर्म्मबादी केते अनुभो प्रसादी भये,
केतन की मति भई न्याय सांख्य मत की ।
केते यज्ञ दान यम नेम को प्रमान करैं,
केते परतीत गही तीरथ बरत की ॥
केते ब्रह्मचारी केते जोगी जटा-धारी भये,
बानप्रस्थ केतन कौं दया साँच सत की ।
मैं तो हूँ पतित मेरी काहू सौं न ह्वै हैं गति,
लक्ष्मी-पति ! राखो पति मोसे जू पतित की ॥५॥
केते करैं सेवा केते राखत हैं लेवा देवा,
केते थितबासी ताके खेत हू का हीला है ।
केते ही-मेवासी केते दान ही के आसी रहैं,
केते ज्ञान ध्यान बिखैं बिबिध रसीला हैं ॥
केते महा सूर केते सब गुन पूर धीर,
केते अति बाँके रन-खेत मैं अरीला है ।
मैं तो अति कूर ताके उद्यम न एको मूर,
जसोमति वारो कारो हमारो वसीला है ॥६॥

केऊ प्रेम लच्छना सुभक्ति मैं विचच्छना हैं,
नीकी भाँति सेवा करैं जानैं विधि ज्ञान की ।
केऊ तत्व-बोध सेती आतम को सोध करैं,
साधे नित जोग गति जानैं रोध प्रान की ॥
केऊ तन सासनाँ सौं बासना तजन चहैं,
करैं हैं उपासना गनेस सिव भानु की ।
मैं तो हूँ अजान ताके काहू सौं पिछान नाँहिं,
कोऊ कछु जानौं हूँ तो जानूँ नाथ जानकी ॥७॥
केऊ ध्यान धारना समाधि बिसै लीन भये,
मिलावै प्रमातमा सौं आतमा विचारी कौं ।
केते निसकाम मन अजपा को जाप जपैं,
केते जपैं संकर धतूरा के अहारी कौं ॥
केतेहू सकाम मंत्र जंत्र आठौं जाम जपैं,
भजैं लोभ दाम कौं गनेस सुखकारी कौं ।
तारो वा न तारो एक आसरो तिहारो मोहि,
कोऊकछु धारो मैंतो धारयो गिरिधारीकौं ॥८॥

लीले हैँ अँगार बृजबासिन के हेत सेती,
धनाजू की खेती बिन बोये निपजाई है।
भीसम को प्रन अरु द्रोपदी की लाज राखी,
असरन सर्न कीर्ति बेदनमें गाई है ॥
बूड़त बचायो ब्रज कर पर गिरि धारि,
म्हैता नरसी की आप हुण्डी सकराई है ।
करिये न बार अब सुनिये पुकार मेरी,
मोपैँ ब्रजराज! गजराज की सी आई है ॥ ९ ॥
दीन-बन्धु दया-सिन्धु मेटैँ दुख द्वन्द फन्द,
बिरद अनेक ऐसे ग्रन्थन मैँ कहिये ।
मेह तैँ उबारे गोप बन्ध तैँ निवारे नृप,
भारत मैँ पार्थ हित एते श्रम सहिये ॥
नामदे कबीर गीध गनिका औ कीर तार्‌यो,
द्रोपदा को चीर बाढ़ि लोक जस लहिये ।
बेरो मँझ धार मेरो दुख-वार-वारध के,
एहो! नाथ! दया-निधि! मेरो हाथ गहिये ॥ १० ॥

। सवैया ।

आरत नेक गुहार सुनी तब,
दीन दयाल की रीत खरी की ।
दौरत है तजके निज धाम कौं,
बात सुनी जन भीर परी की ॥
मेरिहु बेर बिलम्ब भयो सो,
कहा तकसीर करी मैं हरी की ।
धाये सबेर सुनी जब टेर,
करी नहिँ बेर सुबेर करी की ॥११॥
ता दिन टेर सुनी ततकाल,
सहाय के काज तो आप खरे हो ।
सन्तन हेत अनन्त अपार जु,
आप सबैं अवतार धरे हो ॥
मेरि गुहार सुनो नहिँ कान सु,
कान्ह कहो किन बान परे हो ? ।
पोढ रहे बटपातमें नाथ ! कि,
बोरे भये कि जरा जकरे हो ?॥१२॥

करुना-निधि ! कान्ह ! सुनो बिनती,
सुनिबे के बिना प्रभु ! कैसे सरेगो ।
दीन-दयाल दया करिये जु,
गई करिहो तो पला उघरेगो ॥
मोसे कपूत के काम कृपा-निधि !,
या जग मैं कहो कौन करेगो? ।
तातैं अनाथ को हाथ गहो,
रघुनाथ बिना दुख कौन हरेगो ॥१३॥

। कवित्त ।

भक्तन सहाय काज आय ब्रजराज तबैं,
कंस कौं बिदारयो मत धरी नहिँ मामा की।
लाये भर बालद दयाल वा जुलाहेजूके,
गऊ हू जिवाई और छाई छान नामा की ॥
सन्तन को पन राख्यो ग्वाल गन बाल सेती,
बिपत बिदारी दैकैं सम्पत सुदामा की ।
एहो ! बलबीर ! तुम द्रोपदा को बाढ्यो चीर,
हरो क्यौं न पीर अब मोसे हू निकामाकी १४॥

द्रोपदी की लाज काज द्वारिका तैं दौर आए,
चीर कौं बढाय टेक राखी सत सील की।
पुत्र हेत नारायन नाम लेत ततकाल,
काटी जम-जाल गति भई अजामील की॥
मूठी एक चावर के खात ही निहाल कियो,
कैसी दसा भई उन ब्राह्मन कुचील की।
मेरो हू करो सबील होत हो कहा बखील,
तब तो करी न ढील टेर सुनी फील की ॥१५॥
कब को पुकारत हूँ सुनत न एको बात,
एहो नन्दलाल! तुम कैसे प्रतिपाल हो ?।
कहत दयाल सो दया न कहूँ देखियत,
मेरे मन ऐसी आवैं नीके पसुपाल हो॥
धार्‌यो नरसिंह रूप तब प्रहलाद काज,
अब तो न लाज कछु तजी वह चाल हो ?।
डार्‌यो तेल कानन ? कै बसे जाय कानन मैं,
सैंस-सैन लेटे ? किधौं पैठे धौं पताल हो?॥१६॥

बेर बेर टेर टेर जीभ हू सिथिल परी,
हेरत न मेरी ओर कैसे अभिमानी हो।
कृपन भये हो किधौं मौन लै रहेहो कान्ह !,
दया हू न आवै अब कहा मन ठानी हो ?॥
कैसे के उदार तुम होत हो मुरार ! अति,
गोपिन के यार छाछ दधिहूके दानी हो।
बकि बकि थाकी बानी कछु हू न चित्त आनी,
जानी हम जान बूझ करो आनाकानीहो॥१७॥
वेद औ पुरानन मैं करेहैं बखान ऐसे,
सत युग बीच प्रहलाद ध्रू कौं तूठे हो।
त्रेता युग बीच नीच कुल की न कान करी,
भीलनी के हाथ प्रभु भखे बेर ऊँठे हो॥
द्वापर के अन्त तुम द्रोपदा की लाज राखी,
पांडवन काज दल कैरव सौं रूठे हो।
अब कलिकाल मैं जो करो ना सहाय मेरी,
लोग सब हँस के कहैंगे हारि ! झूठे हो॥१८॥

हमैं तुम्हैं बनी गाढ़ी अति ही बहस बाढ़ी,
ता को कहो कौन सो निबेरै अब न्यावरो।
टेरत हूँ भोर साँझ ताकी परवा न कछु,
जानत हो ऐसे जू बकै है कोऊ बावरो ॥
मैं तो महा दीन तुम नाथ बजो दीनन के,
नाम सो प्रमान अब करो क्यौं न चावरो ।
बिरद विचारि कै मुरारि! मेरी लाज राखो,
मेरी लाज खोय हो तो जैहैं ब्रद रावरो ॥ १९॥
जदपि बहोत भई तो हू किये जात गई,
सुनो नेक कान दे कैं जो है बात तन्त की ।
करोगे सहाय कबैं दुखित भयो हूँ अति,
मोपैं जदुराय! आय भई है दुदन्त की ॥
भये हो कठोर जोर किये कहा चालत हो,
नन्द के किशोर! लाज राखो क्यौं न सन्तकी ।
टेरत हूँ बेर बेर बेरी भौंर माँझ मेरी,
एहो! हारि! तुम्हैं का है खबर बसन्तकी?॥२०॥

एहो ! यदुराय ! हम कहत सुनाय अब,
नीके चित धार कर नेक न रिसाय हो ।
हूँ तो पर्यो गैल ताकी किये ही बनेगी टैल,
सब सौं बसाये हरि मो सौं ना बसाय हो ॥
दयावन्त कहावै तो दया हू को काज राख,
मो सो अति दीन तीन लोक मैं न पाय हो ।
देखत हो घेर्यो चहुँ ओरतैं बिपत मोहि,
करि हो सहाय किधौं लोकन हँसायहो?॥ २१॥

घनाक्षरी ।

जगत के स्वामी अन्त्रजामी हू कहावत हो।
हरत न मेरी पीर एते अति कूके पर ,
सुदामा बिभीसन कौं छिन मैं नृपाल कीन्हे,
अरिक रहेहो कहा मोसे एक टूके पर ॥
मो पैं परी भीर तुम देखत हो बिना पीर,
एहो ! घनश्याम ! घन बृथा खेत सूके पर ।
करनी सहाय ह्वै तो बेग ही सहाय करो,
पीछे कहा होय किये औसर के चूके पर॥ २२॥

। मनहर ।

कहा भयो जो पैं तुम द्वारकाके राजा भये,
गोकुल के बासी खासी छाछ के पिवैया हो ।
मच्छ कच्छ कब हू बराह नरसिंह भये,
बाँवन कबहु आछे स्वाँग के भवैया हो ॥
धेनु के चरैया गुञ्जमाल के धरैया पुनि,
बंसी के बजैया अरु बन के बसैया हो ।
टेरत हूँ प्रात रात पूछत न मेरी बात,
जानी हम तात ! भृगुलातके खवैया हो ॥२३॥
कंस जूको कन्ध तोरयो कौरव को बंस बोरयो,
गोपिन को दधि चोरयो बड़े बट पारे हो ।
बृन्दा अरु बकी बोरी कुबजा सौं प्रीत जोरी,
दान देत बली बोरयो चोर चीरवारे हो ॥
काहूठाँकुलीन की सहाय करी सुनी नाँहि,
बेस्या कीर गीध भील इनही कौं तारे हो ।
जरासिन्ध सेती हारे द्वारका पधारे तुम,
काके काज सारे हरि ! औरके बिगारे हो॥२४॥

गोतम की नारी ताकी कथा बिसतारी बहु,
जद्यपि उधारी है पैं छिद्र उघराय कैं।
दुसासन द्रोपदी के सभा बीच केस ऐंचे,
तबैं लाज राख लई लाजकौं गमाय कैं॥
भयो बल हीन छीन अतिही अधीन तबैं,
गज की सहाय काज आये तुम धाय कैं।
दीन के दयाल प्रभु ! या मैं तो सँदेह नाहिं,
करत सहाय हो पैं नीके तन तायकैं ॥२५॥

काहू के तो हेत करि खेत निपजाय दियो,
काहू घर प्रीत काज बालद पठाई है।
काहू के मजूर होय छान ही छवाय दई,
नाई होय नृपति कौं आरसी दिखाई है॥
काहू पैं दयाल होय दारद बिडार दयो,
काहू हेत साह होय हुण्डी सकराई है।
करत मजाखैं जो तो देखत हौं आखैं सब,
कहो हरि ! कहा हम राँड के जँवाई है? ॥२६॥

१ पाठान्तर—मेरे लिये नाथ ! तुम्हैं बात बनआई है।

जानत हूँ भली बिध बड़े बिसवासी होजू,
छल को करैया ऐसो देख्यो कोऊ धूत नाँ ।
पांडु पुत्र हेत कुरुछेत्र मैं रचायो जुद्ध,
कैरू कुल नास काज ऐसो कोऊ दूत नाँ ॥
महा निरदई कछु बात ही न जात कही,
यदुकुल बोरबे कौं ऐसो को सपूत नाँ ।
करते जु पान थन प्रान हू को पान कियो,
पूत नाँहीं पूतनाँ पुकार मुई पूत नाँ ॥ २७ ॥

ब्रह्मा औ महेस सेस नारद गनेस कहैं,
भक्तन के काज हरि ! आप देह धारी है।
मंगल करन दुख द्वन्द के हरन पुनि,
पोसन भरन ऐसे रटैं नर नारी है ॥
बिर्द भक्त-बच्छल सो बेद औ पुरान कहैं,
जानत हूँ ताकौं अब खोबे की बिचारी है ।
द्वारका के बासी भये जात के मेवासी सोऽब,
मेरी ह्वैहैं हाँसी तामैं हाँसी तो तिहारी है ॥२८॥

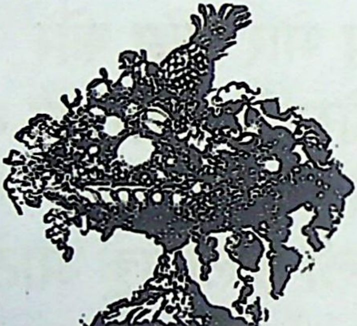
पीपा सम पापी औ सुरापी अजामेल जैसो
व्याध सो अधम तार्‍यो अहल्या उधारी है।
राँको बाँको कीर अरु केतक अहीर तारे,
हाथी से हजार पुनि वार-नार तारी है॥
कूबरी रैदास पीपा धना नामदव छीँपा
ऐसे तो अनेक तारे तार्‍यो नाग कारी है।
अधमा अधम हम तिन की उधार रही,
अधम-उधार! अब वारी या हमारी है॥२९॥
एरे मन मेरे! काहे बिकल बिहाल होत,
चतुर्भुज चिंतामनि तेरी चिंत हरि हैं।
धारैं धर अम्बर बिसंभर कहावत हैं
मोसे दीन दुर्बल को कैसे वो बिसारि हैं॥
असरन-सर्न ऐसो बिरद धरावत है,
भीर परे भक्तन पैं कैसी भाँति टरि हैं।
बारन की बार कछु करी नाँहीं बार सोऽब,
कैसे कैं अवार वे हमारी बार करि हैं॥३०॥

तुम हो दयाल प्रतिपाल रिछपाल जग,
मैं तो हूँ अधीन दीन ऐसी चित आनियो ।
तुम करतार औ अधार निरधारन के,
मैं हूँ निराधार तातैं ऊँची जिन तानियो ॥
तुम जगदीश जगनायक सहायक हो,
मैं हूँ बलहीन छीन निश्चैकरि जाँनियो ।
ऐसी सदा करो जैसो रावरो बिरद नाथ !,
मोसौं ऐसी करो जिन यहै अर्ज़ मानियो॥३१॥
करौं अपराध भोर साँझ कोर कोर नित,
अति ही कठोरमति और को न काम हूँ ।
आतुर अधीर तातैं धीरज धरत नाहिं,
ऊँच नीच बोली ठोली बकूँ आठौं जाम हूँ ॥
अरचा न जानूँ कछु चरचा न बूझत हूँ,
कबू हेत प्रीत सौं न लेत हरि नाम हूँ ।
सबैं तकसीर बलबीर ! मेरी क्षमा करो,
कहै माधोराम प्रभु ! तिहारो ग़ुलाम हूँ ॥३२॥

। दोहा ।

या करुना बत्तीसि कौं, पढ़ैं सुनैं नर नारि ।
तिनके सबदुखद्वन्द्वको, काटैंकृष्णमुरारि ३३॥

इति श्रीपरमभक्त कवि-कर्म-विशारद, कायस्थ-कुल-मिहिर मुन्शी (मनीषि) माधवरामजी विरचिता करुणाबत्तीसी समाप्ता ।



। अथ करुणाऽष्टक लिख्यते ।

। सवैया ।

राख लयो गज को हरि ग्राह तें,
घंट तलै सुत राखे टटेरी ।
आग तें राख लयो प्रहलाद,
पुरान बतावत साख घनेरी ॥
इन्द्र के कोप समें बृज गोप गो,
राख लये सब बेर करेरी ।
दींन दयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ १ ॥
रुक्मिनि की पत राख लई हरि,
मार बिदारकें राय चँदेरी ।
राज कन्यान की टेर सुनी,
नरकासुर मारके बंध निवेरी ॥
भूपति बंधतें मोक्ष किये,
जरासंधने पायन डारिही बेरी ।
दीनदयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ २ ॥

पेट परीक्षित राखलियो हरि,
द्रौनिकों अस्त्र विदार न देरी ।
मेवा तजे दुरयोधन दुष्टके,
प्रीति सौं साग भख्यो घर चेरी ॥
संतन के चित शोच मिटायबे,
चक्र गह्यो कर भारत बेरी ।
दीन दयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥३॥
राखेहैं लाख के धाम में पांडव,
पावक तें सुत राखे मँजेरी ।
सोच अक्रूर को दूर कियो अरु,
मान दयो पुनि कंस की चेरी ॥
पँचालि की टेर सुनी ततकाल,
बढ़ाय के चीर करी ढिगढेरी ।
दीन दयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥४॥

गौतम नार कों तारदई सु,
बिमान मैं बैठ के स्वर्ग गहेरी ।
वेश्या अजामिलसे पतितानकी,
पार करी भवसिंधु तैं बेरी ॥
दामा के धाम रचे सब अद्भुत,
द्वार कबीर के बालध घेरी ।
दीन दयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥५॥
नामा की छांन छवायदई अरु,
गाय जिवाय कैँ गोधन फेरी ।
काढी जनेउ रैदास के कंठतैं,
देवलकी रुख ता दिस फेरी ॥
खेत धना निपजाय दयो,
नरसी महता की सु हुंडी सकेरी ।
दीन दयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥६॥

जिवाय दई जयदेव की नारी,
कियो बिष अमृत मीराँ की बेरी ।
यौं चकवान कौं राखलयो हरि,
बाज मर्‍यो सर ब्याल अहेरी ॥
राखे दवानलतैं मृग-बालक,
हाहा करिके हरिनी जब टेरी ।
दीन दयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ ७॥
सारद नारद शेष जपैं नित,
कीरति ब्यास करै बहुतेरी ।
ध्रूकूँ अभै पदराज दयो हरि,
बाजत नोबत दुंदुभि भेरी ॥
भीर परैं भकतान मैं नाथ,
अनाथ के हाथ गहे ही सवेरी ।
दीन दयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥८॥

। दोहा ।

या करुणाष्टककौं पढैं,
साँझ मध्य अरु भोर ।
तिनके संकट सब हरैं,
निश्चय नंदकिशोर ॥ ९ ॥
चितमें अति बिश्वास धर,
गहि भक्तन की टेक ।
माधोराम कहै प्रभू,
टारैं बिघ्न अनेक ॥ १० ॥

इति श्रीभक्तश्रेष्ठ दिविरकुल दिवाकर विरचितं
करुणाष्टकं समाप्तिमगमत् ॥

॥ शिवमस्तु ॥

अथ

माधव भक्ति रहस्य-

। शब्दानुक्रमणिका ।

अंस—भुजा, कन्धा, हिस्सा.

अकथ—जो कहनेमें नहीं आसकै.

अकालमृत्यु—बेवक्त की मौत.

अकुल—सच्चिदानन्दरूप ब्रह्म.

अखिल—सब.

अगमपंथ—जहां पहोंच न सकै ऐसा रास्ता (कठिन धर्म)

अगस्ति—एक मुनि, जो समुद्रको तीन चल्लूकरके पीगयेथे.

अगाध—जिसका थाह नहीं.

अगौनी—मुखिया.

अग्नि—आग.

अघ—पाप.

अघात—तृप्तहोना.

अङ्ग—शरीर, हिस्सा.

अङ्गार—आगके खीरे, यहां मतलब प्रह्लाद भक्तसे है कि उसको जलाया गया तोभी वो आगमें खेलता हुआ मिला.

अचिगो—पीगया.

अच्छर—अक्षर, (कर्मलेख)

अछूत—विना छुआ हुआ, (परहेजका)

अछोहनी—अक्षौहिणी, जिस सेना में २१८७ रथ २१८७ हाथी ६५६१० घोडे १०९३५० पैदल हों यह एक अक्षौहिणी की गिन्ती है ऐसी १८ अक्षौहिणी महाभारतयुद्धमें थी.

अज—ब्रह्मा, बकरा.

अजनन्द—जोधपुरके महाराजा "अजीतसिंह" की संतान (महाराजा अभयसिंह)

अजपा—हंसनामी मन्त्र, जो आपही श्वास प्रश्वास के आने जाने से निकलता रहता है.

अजाद—स्वतन्त्र (आजाद)

अजामिल–जिसने मरते समय अपने बेटे "नारायण" का नाम लिया इसीसे उसकी गति होगई.

अञ्जली–बोक (दोनों हाथों को मिलाकर जो पानी भरै)

अणु–ऐसा बारीक पदार्थ कि जिसका हिस्सा नहीं होसकता.

अति–बहुत.

अदेव–राक्षस.

अद्यापि–आजतक.

अधम–नीच.

अधम उधार–पापी को तारने वाले.

अधरात–आधीरात.

अधार–आधार (सहारा)

अँधारी–जो आखों पर कपड़ा डाला जाताहै.

अधिकातहूँ–ज्यादा समझताहूँ (विशेष मानता हूँ)

अधिकार–ओहदा, दखल.

अधीन–आधीन (ताबे)

अधीर–चंचल, अपने को काबूमें नहीं रखनेवाला.

अध्यैन–पढना.

अनखाती–नाराज होती.

अनङ्ग–कामदेव (सुन्दर)

अनन्त–जिसका पार नहीं.

अनन्द–आनन्द (खुशी)

अनरत्थ–अनर्थ (ग़ज़ब)

अनल–आग.

अनाचारी–बुरी चालचलनवाला.

अनाथ–गरीब.

अनायुध–विना शस्त्र.

अनावृष्टि–दुष्काल (क़हत)

अनिल–आग.

अनी–सेना (फ़ोज)

अनुभो–अनुभव वह ज्ञान जो स्मरणसे भिन्न हो (तजरुबा)

अनूप–जिसके बराबर कोई दूसरा न हो.

अन्त–अखीर.

अन्तर–भीतर.

अन्तरिच्छ–आकाश.

अन्त्यज–नीच (छोटीजातका)

अन्त्रजामी–भीतर (हृदय)की जानने वाला.

अन्धधुन्ध–जिसमें कुछ खबर न रहै ऐसा अँधेरा.

अन्याय–ग़ैर इन्साफ़.

अपाति–अनाथ.

अबार–देरी, अभी.

अबेर–देरी.

अभमाल–अभयसिंहजी, जोधपुर के एक महाराजा.

अभिमानी–घमंडी.

अभिलाख–इच्छा (ख्वाहिश)

अभैवर–निडर रहने का बरदान.

अमल–साफ.

अम्बर–आकाश.

अयानी–बेसमझ.
अरचा–पूजा.
अरधाङ्गिनी–स्त्री.
अराई–बुलाई हुई.
अरिके–अड़कर.
अरीला–अड़नेवाले.
अरु–और-
अरूप–जिसका कोई रूप नहीं.
अर्थ–धन.
अर्धचन्द्र–आधाचन्द्रमा.
अलाप–आलाप (रागकी आवाज)
अली-मन–मनरूपी भौंरा.
अलसाती–आलसकरती.
अल्ल–चित्रगुप्त बंशी कायस्थ कुलमें बारा जाति हैं–हरएक जातिमें चौरासी२ शाखाएं हैं उन को अल्ल कहतेहैं,
अवनी–पृथ्वी (जमीन)
अवलम्ब–सहारा.
अवलोकन–नजर, देखना.
अवाज–शब्द.
अवाय–आने की खबर.
अविचार–विना विचारकी.
अष्टभुज–आठ भुजा-
असरनसर्न–विना शरणवालों को शरण देनेवाला.
असिधार–तरवारकी धार;
असुर–दैत्य.
अस्सी चार–८४की गिन्ती.
अहङ्कार–घमंड.
अहल्या–गौतमऋषि की स्त्री, जो गौतमके शापसे शिला (चट्टान) होगई थी और फिर श्रीभगवान् रामचन्द्र के चरणोंका स्पर्श होनेसे वह पीछी स्त्रीरूप में होकर सदेह वैकुंठ गई,
अहार–भोजन.
अहि–सांप.

(आ)

आगम–वेदादिशास्त्र, तन्त्रशास्त्र, आना.
आगे--पहिले.
आजार–रोग.
आठसिद्धि–योगसाधनमें आठ सिद्धि होतीहैं यथा अणिमा (इससे योगी जब चाहै तब अपने शरीरको अणु जैसा बारीक बनासकै) महिमा इससे योगी छोटी वस्तु को बहुत बडी कर सकै) गरिमा (इससे हल्की चीज को बहुत वजनदारकरसकै) लघिमा (इससे भारी चीजको बहुत हलकी करसकै) प्राप्ति (जो वस्तु मोजूद न हो वह मँगा सकै) प्राकाम्य (इससे योगीकी किसी तरहकी इच्छा न रुकसकै) वशित्व

(इसमें योगी पूर्ण स्वतन्त्र होजाता है ईशित्व (इसमें योगी को संसार के तमाम विषयों पर मालिकी मिलजाती है)

आतमा–जीव.

आतुर–दुखिया.

आश्र–रक्षा, शरण (सहारा)

आदि–अव्वल.

आन–आकरके, दूसरा.

आनवी–लानेलायक.

आनाकानी–टालाटूली.

आपथापी–मनचाहा काम करने वाला.

आय–आमदनी.

आयुध–शस्त्र.

आरत–दुखी.

आरसी–काच.

आरूढ–चढा (सवार)

आह्लादिनी–आनन्द देनेवाली.

आस–उम्मेद.

आसपास–इर्दगिर्द, ख्वाहिश का फंदा.

आसरो–सहारा.

आसी–उमेदवार-

आसुरी–दैत्योंकी शक्ति.

आहि–है.

(इ)

इकदन्त–गणेश,

इत–इधर.

इतबार–भरोसा.

इतिहास–प्राचीन वृत्तान्तों के ग्रन्थ.

इन्द्र–देवताओंका राजा.

इन्द्रजाल–चतुराईसे नेत्रों पर ऐसा पड़दा डाल देना कि जिसमें वस्तुका असली स्वरूप न मालूम होकर दूसरी ही शकल नजर आवै.

इन्द्रियन–इन्द्रियों (नाक, कान, आंख, जीभ, त्वचा) के

इंदीवर–कमल.

इम–इस तरह.

ईश–महादेव.

(उ)

उक्ति–कहना.

उगमसिंह–एक भक्त का नाम.

उजागर–प्रसिद्ध.

उजैनी–मालवा प्रान्तमें "उज्जैन" नगरी

उडिजान–उडने.

उतरेलिया–माथुरकायस्थजातिकी एक अल्ल.

उदर–पेट.

उदार–दाता.

उदास–फिकरमंद.

उद्यम–पेशा.

उद्योत–प्रगट.

उधार–(उद्धार) बाहिर निकालना. बचाना (उधार) करजलेना.
उधारनी–उद्धार करनेवाली.
उनमादे–मस्त, बदमाश.
उपकार–अहसान.
उपचार–पूजा.
उपद्रव–बखेड़ा.
उपहास–मसखरी.
उपाय–साधन.
उपासना–सेवा, आराधना.
उमगत–उभडताहै (उत्साह सहित होता है)
उर–हृदय.
उरग–सांप.
उरोज–स्तन.
उसीला–सहारा.
उहिं–उसी.

(ऊ)

ऊंची तानना–छोटी बात को ज्यादा खींचना

(ऋ)

ऋद्धि–दौलत, बढना.

(ए)

एक अक्षर–"ओं" या–"ह्रीं" मुन्शी माधोरामजी के भुवनेश्वरी का इष्ट था.
एकाग्रचित्त–और विषयों को छोडकर मनका एकही जगह ठहरना

(ऐ)

ऐंठी ऐंठी–टेढी टेढी.
ऐपें–इतने परभी.

(ओ)

ओक–घर.
ओट–आड, रक्षा.
ओतपोत–एकमेक.
ओर–तरफ, दूसरे.
ओरा–मकान के नीचेके मंजिल में भंडार
ओसधी–दवा.
ओसर–मौका.
ओसियां–मारवाड़में एकगांवका नाम

(क)

कंस–मथुरा का राजा श्रीकृष्ण का मामा.
ककार–(क) इससे प्रयोजन "कायस्थ" जातिसे है.
कच्छदेश–पश्चिम समुद्र के किनारे पर काठियावाड़ से उत्तर और सिन्ध के दक्षिण में समुद्र से घिराहुआ देश, जहां इस समय जाड़ेचा वंशके राव खेंगार जी बहादुर राज्य करते हैं.
कच्छरूप–(कूर्मावतार) समुद्र मंथन के समय विष्णु ने कछुवे का अवतार धारण किया था.

कञ्ज–कमल.
कटकी–शत्रुपर टूट पडना.
कटाक्ष–तिरछी नजर.
कटितट–कमर.
कठोर–कडा हृदय.
कण–दाने.
कण्टक–दुष्ट.
कदम्ब–समूह. एक वृक्ष.
कन्थ–पति.
कन्द–मूल.
कन्दरा–पर्वत की गुफा.
कन्ध–कंधा.
कन्हाई–श्रीकृष्ण.
कपाट–किवाड.
कपि–बन्दर.
कपूत–बुरा बेटा.
कबहूँ काहि–कभीका (बहुत देरका)
कबीर–ये काशीमें रहनेवाले जातके जुलाहे परंतु परमभक्त थे रामानंद जीके चेले थे, कहावत है, कि जो मगधदेश में मरै वह गधा होता है इस बात को झूठा करनेके लिये ये वहीं मरे और सदेह वैकुंठ गये इनके पद मशहूर हैं
कबू–कभी.
कमलनैन–कमल जैसे नेत्र वाले.
कमलानिवास–जिनके हृदयमें लक्ष्मी रहती है (श्रीकृष्ण)
कर–हाथ.
करतार–सृष्टिका बनाने वाला.
करतूत–करतब, काम
करनाटक–दक्षिण भारत में एकदेश.
कराल–भयंकर.
करी–हाथी.
करुणाबत्तीसी–करुणारसके बत्तीस छंदोंकी रचना.
कर्म–काम.
कर्मवादी–कर्महीसे मोक्ष मानने वाले. (बौद्धादि सिद्धान्त)
कलानिधि–सामर्थ्य का खजाना, चन्द्र.
कलि–कलियुग, चार युगों में से चौथा युग जो पूरा ४३२००० वर्षका है जिनमें से गुजरे ५०१० वर्ष.
कलु–कलियुग.
कवन–किस.
कष्ट–तकलीफ.
कष्टहारी–दुःख मिटाने वाली.
कहानी–कथा (बात)
का–क्या.
काँकरी–कंकर.
काँगुरा–कांगड़ा पंजाबमें है जहां ज्वालाजीका मंदिर है.
काज–काम, वास्ते.
कान–कर्णेन्द्रिय, मर्यादा.
कानन–बन (जंगल) कानों में.
कानूगोई–काँनूगो का ओहदा.
काम–प्यारी वस्तु की अभिलाषा (ख्वाहिश)

कामधेनु–समुद्र से निकली गौ, यह मन-
चाही वस्तु देती है.
कामिनी–स्त्री.
कामी–इच्छावाला.
कायस्थकुल–चित्रगुप्त से उत्पन्न हुई
एक क्षत्रिय वर्णकी जाति;
कार–हद.
कारक–करनेवाला.
कारज–काम.
कारन–हेतु.
कारुणिक–करुणाकी.
कारो–काला (श्रीकृष्ण)
काल–समय, मृत्यु.
काहि–किसलिये.
किंकर–चाकर.
किधौं–अथवा, मानों.
किन्नर–देवताओं के गवैयों की एक
देवयोनि जाति, जिनके घोडे का
शरीर और मनुष्य का मुख होताहै.
किशोर–सोलह वर्षकी उमर वाला.
कीर–कालूकीर (मल्लाह) जो भक्त था.
कीर्ति–यश.
कुचील–फटे कपडेवाला.
कुण्डल–कानों में पहिनने का एक जेवर.
कुत्बदीन–कुतब साहिब अजमेरके
ख्वाजे साहबके मुरीद और
खलीफा थे सन् ६३२ हिजरी
में दिल्लीमें देह छोड़ा–
कुब्ज्या–देखो कूबरी शब्द.
कुबेर–यक्षों का राजा जो देवताओं में
सबसे ज्यादा धनवान् है, उसकी
"अलका" नामकनगरी उत्तर
दिशामें मानी जाती है.
कुम्भकरन–रावण का छोटा भाई.
कुरान–मुसलमानों की धर्म पुस्तक.
कुरुक्षेत्र–जहां कौरव पांडवों में महा-
भारत युद्ध हुआ वह स्थान.
कुर्सीबन्ध–राजा, बडे दर्जेवाले.
कुल–वंश, सब, जीव और प्रकृतितत्व
(दिशा काल आकाश पृथ्वी
जल तेज वायु) आदि सब.
कुलदल–वंशका समूह.
कुलाचार–कुल (जीवादिक)में ब्रह्मकी
बुद्धिसे विकल्परहित व्यवहार
करना ऐसा ज्ञान
कुलीन–अच्छे कुल का (खानदानी)
कूकेपर–पुकारने पर भी.
कूबरी–मथुरा में राजा कंस की दासी
जो कृष्ण की कृपापात्र थी.
क्रूर–निर्दय (बेरहम)
कृपन–कंजूस.
कृपान–तरवार.
कृपाल–कृपा रखने वाले.
कृसानकर्म–खेतीका काम.
केऊ–कितने एक.
केसव–श्रीकृष्ण.
केसोदास–एक प्रसिद्ध कवि-
कै–करके
कैद–बंदीखाना (जेल)
कौरव–राजा "कुरु" की सन्तान धृतराष्ट्र
के दुर्योधन आदि १०० पुत्र.

कैरवी–कैरवों की.
कैलासपति–महादेव.
कैसेकै–किसतरह.
कोटवार–शहर का प्रबंध रखनेवाला,
कोटि–क्रोड़ (१०००००००) की गिन्ती.
कोप–गुस्सा.
कोम–जाति.
कोर–किनारा, क्रोड़ की गिन्ती.
कोलों–कबतक.
कौल–सिद्धान्त, प्रकृतितत्व और जीव व ब्रह्म को जो एकरूप जानते हैं (देवीउपासक)
कौलकान–कौलोंने.
क्रान्ति–चमक.
क्रिया–काम.
क्रूर–निर्दई, (कडे दिलका)
क्रोध–गुस्सा.
क्षमा–माफ.
क्षीर–दूध.

(ख)

खगपति–गरुड़.
खटकी–दिल में चुभी.
खड्ग–तरवार,
खण्डनी–तोडनेवाली
खरी–सची.
खल–दुष्ट.
खलास–स्वतन्त्र.
खलु–निश्चय.
खसकत–छिपके भागना.
खानाजाद–गुलाम.
खामी–कसर.
खास–मुख्य.
खासा–मुख्य, उत्तम.
खासी–अच्छी.
खीमसी–एक देवीभक्त जात का महाजन भंडारी
खेजडला–मारवाड़ में एक गाँव जो भाटी सरदार के जागीर में है. जहां देवीका प्रसिद्ध मंदिर है
खेद–पश्चात्ताप (अफसोस)
खेबे–खाने को.
खोयबे–नाशकरने, गमाने.

(ग)

गई करिये–जैसे चलता है वैसे चलने दो ऐसा भाव.
गज–हाथी.
गजघंटा–हाथी का टोकरा.
गजमुख–गणेश.
गच्छी–गई.
गञ्जनी–नाश करनेवाली.
गति–ज्ञान, उपाय.
गदा–एक प्रकार का शस्त्र.
गन–समूह.
गनका–वेश्या, जनकपुर में रहनेवाली "पिंगला" नामक वेश्या जो सुआ को हरिनाम रटाने से ही मुक्त होगई.

गम–खबर.
गरीबनिवाज–गरीबों को पालने वाली.
गहन–गहरा.
गहिये–पकडिये.
गही–पकडी.
गह्यो–पकडा.
गाँठ–पास.
गाडर–भेड.
गावत–गातेहैं
गिरि–पहाड़ अर्थात् ''गोवर्द्धन पर्वत'' जिस को श्रीकृष्ण ने बालक अवस्थामें बायें हाथ की सबसे छोटी अंगुली पर उठाकर व्रज को इन्द्र के कोपसे बचाया था.
गिरिधारी–श्रीकृष्ण.
गिरिनन्दिनी–पर्वतकी पुत्री (पार्वती)
गिरिनाथ–यह ''माधोरामजी'' के गुरु का नाम है.
गीत–मरुभाषा का छन्द विशेष, संगीतपद्य.
गीध–''जटायु'' नामक गीध पक्षी सीताको छुड़ानेके लिये रावणसे लडकर मारागया उसे अंत में श्रीरामचन्द्रने दर्शन देकर मुक्ति दी और अन्तिम क्रिया खुद भगवान् ने की.
गीधे–लीन होगये.
गुञ्जमाल–चिरमूं की माला.
गुणतीन–सत्त्व, रजे, तमे.
गुन–ज्ञान विनय शूरता आदि धर्म, रस्सी.
गुनैगारी–अपराध.
गुलाम–चाकर.
गुसांई–बाबा श्रीगुसाँई बडे करामाती थे और मारवाडमें ''सिद्धांका-पांचला'' नामक गाम में हुएथे.
गुह–स्वामिकार्तिक.
गुहार–पुकार, आवाज.
गेह–घर.
गैलपड़ना–पीछेही पड़जाना, पीछा न छोड़ना.
गो–यद्यपि (अगरचे)
गोतमकी नारी–देखो ''अहल्या'' शब्द.
गोप–गउओंको चराने वाले.
गोपाल–गउओंका पालने वाला, श्रीकृष्ण.
गोरी–स्त्री.
गौरी–पार्वती.
ग्रन्थ–पुस्तक.
ग्रन्थकारक–ग्रन्थ बनाने वाला.
ग्रासै–खाजातीहै.
ग्राह–मगर, जिसने हाथी को पकड़ लिया था.
ग्रीसम–गर्मी की ऋतु (जेठ, आषाढ के महीने)
ग्वार–घरका चौक (आहाता)

(घ)

घट–हृदय (दिल)
घटा–बादल.

घन–घटा, अत्यन्त.
घनघोर–बादल की गर्जना.
घनश्याम–श्रीकृष्ण.
घनी–बहुत (ज्यादा)
घनेरो–बहुत सा
घनो–अत्यन्त (खूब)
घरनारी–स्त्री.
घरनी–स्त्री.
घरबारी–गृहस्थी.
घरी–घड़ी
घात–मारना, चोट.
घोखै–रटताहै.
घोर–आवाज, भयंकर.

(च)

चकवाकीसी–चकवा (एकपक्षी) के जैसी.
चकोर–एक पक्षी, जो चन्द्रमा को बहुत चाहता है.
चक्रधारी–चक्र (एक प्रकार का शस्त्र) को धारण करने वाली.
चण्ड–एक दैत्य, निर्दई.
चतुरानन–ब्रह्मा.
चतुर्भुज–विष्णु.
चन्द्रचूड–महादेव.
चरचा–विचार.
चरन–पर.
चलाचली–हलचल.
चहत–जैसा चाहा वैसा.
चहूँ–चारों.
चातक–एक पक्षी (पपीहा.)
चाबगई–चबागई.
चामुण्ड–देवी.
चार–गुप्तदूत (ख़बरनवीस) ४ की गिन्ती.
चारमुखवारौ–ब्रह्मा.
चारी–चुगली.
चारु–सुन्दर.
चारो–घास (यहां प्रयोजन खाजाने से है)
चाह–इच्छा.
चित्तवृत्ति–मन की हालत.
चित्यो–देखा.
चित्रगुप्त–धर्मराज का भेद, जो जीवमात्रके कर्मोंको लिखतेहैं इसी देवयोनि से कायस्थकुल उत्पन्न हुआ इसका सविस्तर वृत्तान्त पद्मपुराणमें है.
चिदानन्द–ज्ञान और आनंदस्वरूप ब्रह्म.
चिन्त–फिकर.
चिन्तामणि–एक मणि जो मनमाँगा देवै.
चीनी–पहिचानी.
चीन्हें–पहिचानने पर भी.
चीर–वस्त्र, श्रीकृष्ण गोपियों के चीर चोरकर कदम्ब पर चढगये थे.
चुगल–पीठपर बुराई करनेवाले.
चुम्बक–लोहे को खीचने वाली मणि.

चूरन—पीसीहुई चीज.
चेरो—चाकर.
चैन—सुख.

(छ)

छबि—शोभा.
छमुख—स्वामिकार्तिक.
छाजै—सुशोभित होतीहै.
छाडा—छोडदिया.
छात—मकानकी छत.
छार—राख.
छिद्र—दोष (ऐब)
छिनक—तुर्त.
छीन—पतली, दुबली.
छोरे—लडके.

(ज)

जकरे—जकडना.
जग—जगत् (दुनियां)
जगतात—संसारके पूजनीय.
जगदाधार—जगत् का सहारा.
जगनायक—जगत् के स्वामी.
जगविघ्नविनाशक—गणेश.
जगमंडी—जगत् को सुशोभित करने वाली.
जज्ञ—यज्ञ.
जङ्ग—युद्ध.
जङ्गा—युद्ध.
जँजाल—दुःख.
जँझेरे—फफेड डाले, जकड़ादिये.
जदुराय—यादव कुल के राजा.
जन—भक्त, मनुष्य.
जनक—पिता, मिथिला नगरी का एक परम ज्ञानी राजा (सीताजी का पिता)
जननी—माता.
जनेजन—हरएक.
जन्त्र—यन्त्र (देवता का आसन)
जमजाल—जमराज की जाल.
जमद्वार—मृत्यु.
जरन—जलना.
जरा—बुढापा.
जरासन्ध—मगध देशका राजा और कंस का ससुर जिसको श्रीकृष्णने १७ बार हराया पश्चात् १८ वीं बार इसीसे भीत हो मध्य देश छोडकर द्वारका गये.
जलधारी—पानी रखनेवाला नौकर.
जलाजन्ध—जिसमें कुछ पता न लगै.
जवन—मुसलमान.
जसोदा—यशोदा, गोकुल के निवासी नन्दजी की स्त्री ।जिसने श्रीकृष्ण को पाला था.
जसोमतिवारो—यशोदावाला, अर्थात् यशोदा का पाला हुआ
जहाज—महामाया का पूर्णकला का अवतार, चारणजातिमें "करनी" के नाम से मारवाड में हुवाहै उन का अभी मुख्य पूजास्थान

बीकानेर के पास "देसणोक" है इनके कई परचे प्रसिद्ध हैं उनमें से एक यह है कि एक जवरसाह (इसे कोई "जगड-साह" भी कहते हैं) नामक व्योपारी जहाज में माल भर कर समुद्र में चला मगर जब तूफान से जहाज डूबने लगी तब उसने करनीको पुकारा उस समय में करनी जी अपने घर मारवाड में उनकी सासू के सामने गऊ दुह रहे थे वहां बैठे ही उन्हौंने हाथ बढाकर उस शाह की जहाज को बचाई जब सासूने पात्रमें एक हाथकी धार पडती देख दूसरे हाथ का वृत्तान्त पूच्छा और करनीजीके समुद्र संबंधी वृत्त कहने पर सासूने झूठा समझा तब उन्हौंने अपना वह हाथ झडझडाया तो चूडेमें से शंख सीपों का ढेर होगया और अमाप पानी गिरा उस समय करनीजीने उस समुद्र जल को कहा कि "पुत्र! वाडे बंधीमें रहना" तब से देशणोक की हदमें अब भी कोई वाडा बांधकर (अर्थात् निवास करने के लिये घर बना कर उसके चारौं तरफ दीवार या घास कांटेका आहता बनादेना) उस बाडेमें कुवा खोदै तो नजदीक ही पानी निकलजाताहै और बाडे के विना खोदनेसे वहीं सैकडों हाथ नीचे पानी निकलता है.

जाचबेकौं—मांगनेके लिये.

जाडा—बडे.

जातपर्सना—मारवाड की भाषा में इष्ट के दर्शन करनेको कहतेहैं.

जानकी—सीताजी.

जाह्नवी—गंगा नदी.

जाप—मन्त्र व इष्टदेवके नामको वारवार बोलना.

जाम—प्रहर (रात दिन का आठवां हिस्सा.)

जाल—फंदा.

जलनी—जलानेवाली.

जालपा—देवी.

जिन—मत.

जियदान—जीवदान.

जिहान—दुनियां.

जीजिये—जीते हैं.

जीवन—जीविका, जिससे जीते हैं.

जुगजुग अन्त—अनेक युग.

जुगनपुर—यज्ञपुर (दिल्ली)

जुरी—मिली.

जुलाहे—कपडा बनानेवाले (कबीर)

जैसल—कच्छ देश में एक पीर जिन की कबर, अञ्जार नामी नगर में है.

ताप–दुख.

तायकें–तपाकर.

तारन–तारने वाली, पार उतारने वाली.

ताल--ताली (दोनों हाथों को मिलाने में जितना समय लगै वह)

तिमर–अन्धेरा.

तिराहि–रक्षाकर, बचा.

तीन काल–भूत (होचुका यानी गुजरा हुआ वक्त) भविष्यत (आनेवाला वक्त) वर्तमान (जो वख्त गुजर रहा है)

तीन ताप–आध्यात्मिक (अपने मन और शरीरसे पैदा होनेवाला दुःख शोक मोह ज्वर आदि) आधिदैविक (बिजली गिरना, लाय लगना आदि से उत्पन्न हुआ दुःख) आधिभौतिक (सिंह साँप आदि से उपजा दुःख)

तीन लोक–स्वर्ग, भूमि, पाताल.

तुरीया–चित्तकी एकाग्रता रूप चौथी (जाग्रत स्वप्न, सुषुप्ति इन तीन अवस्थाओं से जुदी) अवस्था.

तेज–प्रकाश.

तैं–से, तेनें.

तौलादे–कच्छ के पीर जैसल की स्त्री। यह बडी देवी भक्त थी–जैसल एक डाकू था तोला से शादी होनेके पीछे जैसल भी उसके सत्संग से सुधर गया.

त्यों–वैसेही.

त्रयलोचनी–तीन नेत्र वाली (देवी)

त्रिकाल–भूत, भविष्यत, वर्तमान.

त्रिपुराय–देवी.

त्रेता–चार युगों में से दूसरा युग जो १२९६००० वर्षका था.

त्रेधाताप=तीन तरह का ताप (आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक)

(थ)

थन–स्तन.

थलदेस–मारवाड का एक प्रान्त जो बहुत रेतीला है.

थान–स्थान

थार–थाली (भोजन का पात्र)

थित–सदा रहनेवाली अर्थात् भूमि.

थितवासी–सदा एक जगह रहनेवाले.

(द)

दण्डवत–प्रणाम.

दत्तात्रेय–एक ऋषि.

दफ्तर–वह स्थान जहाँ सरकारी कागज़ रहताहै.

दम्भी–घमंडी.

दया–रहम.

दयानिधि–दयाके खजाने.

दरबर–दौडनेकी गति.

द्वापर–तीसरा युग ८६४००० वर्षका.
द्वार–दरवाजा
द्वारका–श्रीकृष्णकी बसाई हुई पश्चिम समुद्र के किनारे पर एक पुरी
द्विजराम–परशुराम (अवतार) जिन्होंने इक्कीस बार पृथ्वी को निःक्षत्रिय करदी थीं.
द्विरद–हाथी.

(ध)

धतूरा–एक जहरीला पौदा.
धनपाल–देखो कुबेर शब्द.
धना–एक जाट भक्तका नाम.
धनी–मालिक.
धर–पृथ्वी.
धर्म्म–वेद और धर्मशास्त्रों में कहा गया कर्म्म.
धाता–ध्यान करने वाला.
धाम–स्थान.
धाय–दौड़कर.
धार–धारा, जलका सोत.
धारना–आत्मामें चित्तकी स्थिति (एक योगका अंग)
धारू–यह जातका खाती करामाती हुआ है.
धारें–स्मरण करने से, धारण किये.
धारो–ग्रहणकरो, मानो.
धावतही–दौडतीथी.
धीर–धीरजवाला (हौंसलेवाला.)
धीरज–धैर्य.
धुर–प्रथम.
धू–ध्रुव, राजा उत्तानपाद का पुत्र और विष्णुका परम भक्त था.
धूत–ठग, बदमाश.
धूम्रनैन–धूम्रलोचन नामक दैत्य.
धूर–मिट्टी.
धेनु–गऊ.
धों–प्रकार, तरह.
धोखै–धोका.
धौलागिरि–हिमालयकी एक चोटी.
ध्यान–स्मरण, इष्टदेवको मनमें धारण करना.
ध्याय–भज, स्मरणकर.
ध्येय–जिस का ध्यान किया जावे वह.

(न)

नउका–नाव.
नग–पहाड़.
नगरकोट–एक शहर जहां देवी का मंदिर है.
नचीती–बेफिकर.
नन्द–गोकुल के रहनेवाले जिनके घर श्रीकृष्णने परवरिश पाई थी.
नन्दरानी–यशोदा.
नर–मनुष्य.
नरसिंह–नृसिंहावतार जो विष्णुने प्रह्लादको बचाने और हिरण्यकशिपुको मारने के लिये आधा मनुष्य आधा सिंह ऐसा स्वरूप मुलतान में लिया था.

नरसीमहता—काठियावाड प्रान्त के जूनागढ शहर में एक भक्त हुआ है जिसकी हुंडी श्रीकृष्णने द्वारिका में शामल साह बनकर सिकारी थी.

नवखण्ड—जम्बूद्वीपके नवखण्ड १ उत्कल २ हिरणमय ३ भद्राश्व ४ केतुमाल ५ इलावृत्त ६ नाभि ७ किम्पुरुष ८ भरत ९ नरहरि

नवदुर्गा—शैलैपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघैण्टा, कूष्मॉण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालँरात्री, महागौरी, सिद्धिदात्री.

नवधाभक्ति—गुणमाहात्म्यासाक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दासासक्ति, सख्यासक्ति, आत्मनिवेदनासक्ति, तन्मयतासक्ति, परमविरहासक्ति, यह नौ प्रकार की भक्ति होती है.

नवनिधि—महापद्म, पद्म; शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व, ये खजाने की संख्या हैं.

नवरात—आसोज (आश्विन) और चैत्र शुक्लपक्ष की प्रतिपदासे नवमी तक.

नवीनो—नया.

नवेरो—निमटाओ, हटाओ.

नष्ट—नाश.

नसत—नाशहोते.

नाकी—नाकों में.

नाग—सांप

नागकारी—काली नाग, जिसके फणपर श्रीकृष्ण ने यमुना के कालीदह (वृन्दावन के पास) में नृत्य किया था.

नातो—संबंध.

नाथ—मालिक, एक सम्प्रदाय.

नाथजानकी—श्रीरामचन्द्र भगवान.

नानक—ये पंजाब देश में राबी नदी के किनारे किरतारपुर में हुए थे और सूर्यवंशी क्षत्री थे, इनका जन्म सं० १५३२ कार्तिक सुदि १५ का था। ये बहुत करामाती थे। इन की एक बात प्रसिद्ध है कि ये सं० १५५२ चै. शु. २ को मक्का गये और वहां एक दिन काबा अर्थात् खुदाके घर की तरफ पैर फैलाकर सोगये, तब मुसलमानों ने वैसा करने से मना किया तो नानकजीने कहा कि तुमही मेरे पैर उठाकर जिधर खुदाका घर न हो उधर रख दो, जब मुसलमानोंने वैसा किया तो जिधर जिधर उनके पैर घुमाए गये उधर ही "काबा" घूमगया । इन्होंने नानकपंथ चलाया.

नामदेव—यह जात का छीपा परम भक्त हुआ है जिसके झोंडेकी छान श्रीकृष्ण ने छाई थी और इस की भक्ति की परीक्षा

लेने के लिये एक राजाने एक मरीहुई गायको जिलाने-के लिये कहा तो श्रीकृष्ण की कृपासे वह जी उठी.

नामा—देखो नामदेव शब्द.

नायकी—मुखिया.

नार—स्त्री.

नारद—एक मुनि, ब्रह्माके पुत्र.

नाशो—नाश करो.

निकामा—निकम्मा.

निगम—वेद.

निगुण—शुद्धब्रह्म. सत्त्व, रज, तम इन गुणों से रहित.

निज—अपने.

नित—सदा.

निपट—अत्यन्त.

निर्मूल—नाश.

निराधार—विना सहारेवाला.

निर्दई—निठुर (बेरहम)

निवाजै—पालै.

निवृत्ति—सांसारिक सुखों को छोडकर ब्रह्मानन्द की तरफ झुकना.

निवेरिये—मिटाओ, हटाओ.

निशुम्भ—एक दैत्य जिसे देवीने मारा था.

निस—रात.

निसकाम—फलकी इच्छा विना कार्य करना.

निसैनी—सीढी.

निहचै—निश्चय.

निहाल—सबतरहसे सुखी.

निहारै—देखताहै.

नीकी—अच्छी.

नीके—ठीक, अच्छी तरहसे.

नीच—ओछे.

नीर—पानी.

नृप—राजा.

नृपाल—राजा.

नेक—थोडी (ज़रा)

नेति—जिसका अन्त नहीं.

नेम—नियम. शौच, सन्तोष तपस्याआदि कर्म.

नेहदृष्टि—स्नेह की नजर.

नैन—आंख.

नौका—नाव.

न्याय—महर्षि गौतमका बनाया हुआ शास्त्र (दलीलसे जाँच करना)

न्यावरो—इन्साफ.

न्यास—त्याग, संन्यास (दिलसे विषयों-को छोडदेना)

(प)

पछारो—मारो.

पञ्चप्रेत—तत्त्व.

पञ्चमुखवारो—महादेव.

पञ्छीसुत—महाभारत युद्धमें टीटोडी पक्षीके बच्चे बीच युद्धभूमि-में थे परंतु उन पर हाथी-का टोकरा आ पडनेसे ईश्व-रीयकृपासे वे बचगये.

पठंगा—सहारा.

पठाई–भेजी.
पत–इज्जत.
पतंग–कीडे जो रात्रिमें दीपक पर गिरते हैं.
पताल–नीचेका लोक.
पदकमल–चरणरूपी कमल.
पदपङ्कज–चरणरूपी कमल.
पदार्थ चार–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष.
पद्मआसन–योगका एक आसन अर्थात् दाहिने पैरको बांई जंघाके ऊपर और बांये पैरको दांही जंघा के ऊपर चढाकर सीधे बैठना.
पन–प्रण, भीष्मपितामहके दो प्रण थे (१) दश दिन लडना (२) महाभारत संपूर्ण होने पर प्राण त्यागना.
पनिहार–पानी भरने वाली.
पन्नग–सांप.
पन्थ–रास्ता, संप्रदाय (मजहब)
पय–पानी.
पयाल–पाताल.
परखंड–दूसरे देशमें.
परतीत–विश्वास, भरोसा.
परदच्छिना–इष्टके इर्द गिर्द फिरना (परिक्रमा)
परधानगी–प्रधानपद.
परबोध--समझाना.
परमलोक--उत्तमलोक (स्वर्ग)
परमारथ--परलोक संबंधी कार्य.
परसे--दर्शन करने से.
परापर--सदासे.
पराभक्ति–भक्ति की वह हालत कि जिसमें भक्त को संसार के सब पदार्थ ईश्वर रूप ही दीखे.
परिणाम· नतीजा.
पर्म–श्रेष्ठ, अत्यन्त.
पर्मगुह्या–अत्यन्त छिपी हुई.
पर्मपर्दा–श्रेष्ठ आवरण (पर्दा)
पर्यङ्क–पालखी.
पर्यन्त–तक.
पलपल–क्षण क्षण (आंख को पलक गिराने में जितना समय लगै उतने समय को क्षण कहते हैं)
पलाई–भागगई.
पला उघरेगो–इज्जत जावेगी.
पसुपाल–गौवें चरानेवाले.
पहार–पर्वत.
पाजी–बदमास.
पाठक–पढनेवाला.
पांडवराय–माथुरजातीमें भेडतवाल अल्लकी कुलदेवी.
पांडु–युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव.
पांडुपुत्र–युधिष्ठिर आदि.
पान–पीना.
पापहानी–पापों को नाश करने वाली,
पामर–नीच, मूर्ख.

पाय—पैर, पाकरके.
पायन—पावों.
पारकी—दूसरेकी, पल्लेपार करदी.
पारथ—अर्जुन, महाभारत में इस का रथ श्रीकृष्णने हांका था.
पारावार—समुद्र, पल्लेपार.
पावक—अग्नी.
पावस—वर्षाऋतु (श्रावण—भादवा)
पासी-वरुण, जलतत्त्व का मालिक एक देवता.
पिक—कोयल.
पिङ्गल—छन्दशास्त्र.
पिंड—शरीर.
पिसाची—एक प्रकार मांसखानेवाली आसुरी योनी.
पीडित—दुःखी.
पीन—मोटे.
पीपा—गागरोण (कोटा राज्य में) का खीची राजा जो पहिले देवी उपासक था फिर रामानुज का शिष्य होकर श्रीकृष्णसे मिलने को द्वारकामें गया और भक्तिवश समुद्र में कूदकर असली स्वर्णकी द्वारकामें श्रीकृष्णके पास रहकर पीछा आया.
पीर—सिद्धपुरुष, दर्द.
पीरवारो—दर्दवाला (रोगी)
पुञ्ज—ढेर (समूह)
पुनि—फिर.
पुरान—वेदव्यासजी के बनाए हुए कथा भागके १८ ग्रंथ ।
पूत—पुत्र (लडका)
पूतना—एक राक्षसी जो श्रीकृष्ण को मारनेके लिये मथुरा से स्तनोंपर जहर लगाकर गोकुलको भेजी गई और उसके स्तनों द्वारा भगवान् श्रीकृष्णने उसके प्राणों-कोही पीलिया.
पूर—पूरण.
पेसकसी—नज़राना
पेसकार—मोहर्रिर.
पैठी—घुसगई.
पैनी—तीखी.
पैरवी—मदद, सहायता.
पोखी—पालनकरी.
पोसन—पालन.
पोसनी—पालनेवाली.
पौर—द्वार (दरवाजा)
पौन—पवन.
प्यादे—पैदल सिपाही.
प्रकट—जाहिर.
प्रकासनी—प्रगट करनेवाली.
प्रचंड—वडा भारी, जबरदस्त.
प्रजारी--जलाई.
प्रजुल्लत—जलतीहुई.
प्रणव--ईश्वर का वाचक (ओं) शब्द-
प्रतिज्ञा—प्रण, पूर्वकाल में देवी यह प्रण लेकर बैठगई कि जो मुझे

बन्दत--शिर झुकातेहैं.
बन्ध--जीवका सांसारिक कर्मोंमें फँसना, कैद.
बन्धमोक्ष--कैदसे छुटकारा.
बन्धव--संबंधी.
बर--चाहीहुई वस्तुका देना.
बरजोरी--कठिनतासे, जबरदस्ती.
बरतमान--जो समय गुजर रहा है.
बरन--जाती.
बरबाद--भ्रष्ट, बिगडना.
बराह--देखो वाराह शब्द.
बर्ग--धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष.
बर्ण--ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र.
बर्दा--बरदान देनेवाली.
बर्दाई--बरदाने वाला ।
बल--राजा बली, पराक्रम.
बलदेव--श्रीकृष्णके बड़े भाईका नाम.
बलबाँह--बाहुबल (पराक्रम)
बलवीर -बलदेवजीके भाई (श्रीकृष्ण)
बलाम--आफत.
बलि--पाताल का राजा बली (जिसके पास विष्णु वामन अवतार धारकर दान लेने गये और तीन पेंड पृथ्वी मांग कर त्रिलोकी ले ली) पूजा की भेंट, फिर.
बल्ली--बेल.
बवासीर- मस्सेकी बीमारी.
बसन--कपडे.
बसना--काबू में नहीं.
बसन्त--मुख्य ऋतु (चैत्र, वैशाख)
बसुदेव--श्रीकृष्णके पिता.
बसें--बसतेहैं.
बसेरो--निवास.
बसैया--बसनेवाले.
बहार--सहाय (मदद)
बहिर--बाहिर के.
बहु--बहुत.
बहुरि--फिर.
बाँके--टेढे (बहादुर)
बाजी--प्रपंच.
बाजेराव--पूना के एक पेशवा का नाम.
बांझी--निष्फल.
बादवान--वह कपडा जिसमें हवा भरनेसे नाव चले.
बाधा--उपद्रव, दर्द.
बाधो--सब (यह मारवाड़ी शब्द है)
बान--तीर, आदत.
बानप्रस्थ--तीसरा आश्रम जिस में मनुष्य घर छोडकर बन(एकान्त) वास करताहै.
बानिज--ब्योपार.
बानी--बोली,
बाम--स्त्री, बायां.
बार--जल, समय, देरी, जलाकर.
बारदा--घंटा.
बारन--हाथी (देखो कुबेर शब्द)
बारनार-बेश्या (देखो गनिका शब्द)

बाराह--हिरण्याक्ष पृथ्वी को लेकर पातालमें चलागया तब उसे मारने व पृथ्वीका उद्धार करनेके लिये विष्णुने सूअर का अवतार धारण किया था.
वारिधि--समुद्र.
वारी--जल.
वाल--वाल नामक राक्षस जिसे श्रीकृष्णने मारा, केस, बालक.
बालका--बचा.
बालद--श्रीकृष्ण कबीर भक्तके लिये बालद भर लायेथे.
बावन--वामन अवतार
वावरो -पागल.
वास--स्थान (गाँव)
बासना--इच्छा.
वासर--दिन.
बासी--रहनेवाला.
विकराल--भयंकर.
बिकल--घबराया हुआ.
विकल्प--शक.
बिख्यात--प्रसिद्ध.
विगत--तफसील, वोरा.
विघ्न--उपद्रव.
विचच्छना--विचक्षण (हुशियार)
बिचारो--ग़रीब.
विचित्र--बहुतही अजीब,
बिजोग--बिछुडना, अलग होना.
बिडार--नाश, मारकर,
वितान--चँदोआ (सायबान)
वित्त--धन-
विथा--दुःख.
विदारनी--नाश करने वाली.
बिदारो--मारो.
बिदुर--कौरवोंका प्रधान मन्त्री जो एक दासीके पेट से पैदा हुआ था.
विद्यानगर--नगर का नाम.
विद्यारण्य--नाम.
बिधि--ब्रह्मा, तरह.
बिनती--प्रार्थना (अर्ज)
विनासनी--मेटने वाली.
बिन्दु--एक प्रकार का तिलक.
बिन्दुनादनी--प्रणवध्वनिस्वरूपा.
विन्ध्यागिरि--विन्ध्याचल पर्वत.
विपत--दुःख.
विपदा--पीडा, मुसीबत,
बिप्त--मुसीबत.
बिबिध--तरह तरह.
बिवेक--विचार.
बिभीषन--रावणका भाई, रामचन्द्रने रावण को मार इसे लंकाका-राजदिया.
बिमल--साफ.
बिमोच--छुडाना.
बिरद--तारीफ करनेके लायक काम.
विराट--बहुत बडा (संसार.)
बिराम--आखिर (आखिरी हालत)
विर्द--देखो बिरद शब्द.

विलंब–देरी.
विलास–खुशी की हर्कत, चमक.
विलोकन–देखने.
विह्वल–गड़बड़ (बेठीक)
विश्व–संसार.
विश्वनाथ–माम.
विश्वामित्र–राजा गाधिका पुत्र, इनसे और ब्रह्माजीसे लडाई होगई तो इन्होंने नई ही सृष्टि (पैदायश) रच दी अर्थात् बंदर, गधा, भैंस, ऊँट इत्यादि इन्ही की सृष्टि है.
विश्वास–यकीन, भरोसा.
बिस–जहर.
बिसतारन–फैलानेवाली.
बिसम–संकट.
विसम्भर–संसारको पालने वाले.
बिसरिहैं–भूलेंगे.
बिसवासी–भरोसा करने लायक.
बिसाल–वहुत बडा.
बिसूरन–वीतेहुए सुखको याद करके रोना
बिसें–में.
बिहंगम–पक्षी, अर्थात् टीटोडीके बच्चे जिनको श्रीकृष्णने महाभारतकी युद्धभूमिमें हाथी के घंटके नीचे बचा लिये थे.
बिहंडनी–नाश करनेवाली.
बिहाल–बेहाल.
बीते–बीत गये.
बीधे–तल्लीन होगये
बीन–वीना–एक प्रकारका बाजा.
बुध–बुद्धि.
बूझत–जानना, समझना, पूछना.
बूडत–डूबते हुए.
बृथा–नाहक.
बृद्धपने–बुढापे.
बृन्द–यह मेड़ता ग्रामके रहनेवाले भोजक ब्राह्मण कविका नाम है, समूह.
बृन्दा–यह राजा जालंधर की पतिव्रता स्त्री थी उस पर मोहित हो विष्णुने जालंधरका कृत्रिम रूप बनाकर उसका पतिव्रत खंडन किया.
वृषप–महादेव.
बेगदै–जलदी करके.
बेद–हिन्दुओंकी धर्मपुस्तक अर्थात् ऋग् यजुः साम अथर्वण.
बेदजानी–जिसे बेदमें जाना.
बेदन–दुःख.
बेदबानी–जिसकी वानी बेद है.
बेदव्यास–पराशर ऋषिके पुत्र और महाभारत भागवत आदि १८ पुराणोंके बनानेवाले.
बेर–समय, देरी.
बेरी–नाव, लोहेकी जंजीर जो कैदियोंके पैरोंमें डाली जातीहै.
बेरू–वालूरेत.
बोरे–बावले.

भीनी–भींगी (गीला होना)
भीर–संकट, सहायता (मदद)
भीलनी–शबरी (भील की स्त्री) जिसके हाथ के झूंठे बेर श्रीभगवानने खाये थे.
भुज–हाथ.
भुजदण्ड–मजबूत भुजा.
भू–पृथ्वी.
भूत–जो समय बीत चुका.
भूप–राजा.
भूपति–राजा.
भृगु–एक ऋषि, ये देवताओं के कहने पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश में श्रेष्ठ कौनहै यह परीक्षा करने के लिये निकले और ब्रह्मा महेश का परीक्षार्थ अनादर किया तो वे क्रोधित होगये, फिर विष्णु के पास जाकर उसी भावसे उनकी छाती में लात मारी तो विष्णु हाथ जोडकर खडे होगये और कहा कि कहीं आपके कोमल पैर में तो न लगी ? इसी से भृगुने शान्तमूर्ति विष्णुही को मुख्य माना। मनुष्योंके हृदय स्थान कोभी इसीसे भृगुलत्ता कहतेहै.
भेद–पता, फरक, अलग अलग.
भैरव–देवीका गण.
भैरवी–देवी.
भेस–शकल.
भो–है.
भोग–सुखदुःखका अनुभव.
भोर–चकर (तूफानी समुद्रके जलमें चकर पडताहै वह), भँवरा (एक कीट)
भोर–प्रातःकाल.
भौसागर–संसार रूपी समुद्र.
भ्रम–संदेह (शक)

(म)

मग–रास्ता.
मगन–मस्त.
मगरूर–घमंडी.
मगहीन–रास्ते से भूलाहुआ.
मग्न–डूबा.
मङ्गल–कल्याण.
मङ्गा–मांग (स्त्रियों के मस्तक में बनाई हुई केशोंकी लकीर)
मच्छ–मच्छावतार.
मच्छर–असूया (डाह)
मजाखे–ठट्टे.
मज्जन- स्नान आदिक कराना.
मज्जारी–बिल्ली, कुम्हार के आवमें बिल्लीके बचे घुसगये और उन को न जानकर कुम्हारने उसमें आग लगादी परंतु ईश्वर कृपासे आव जलजाने पर भी वे बचे न जले यह देखकर ही प्रल्हादकी भक्ति दृढ हुई थी.

मढे—तयारहुए, ढके.

मत—धर्म, सिद्धान्त.

मतवारि—मस्त (नशेमें चूर)

मति—बुद्धि.

मतिधीर—बुद्धिमान्.

मतिमन्द—कम अकल.

मद—नशा, घमंड.

मदद—सहायता.

मधुकैटभ—एक दैत्य.

मधुप—भँवरा.

मनसा—मन की इच्छा.

मनहर—सुंदर, ३१ अक्षरका (कवित्त) छन्द.

मनोवाञ्छित—मनचाहा.

मन्त्र—देवता आदिको सिद्ध करने के लिये तन्त्र आदिमें कहा हुआ शब्दविशेष.

मन्त्री—प्रधान, सलाहकार.

मन्द—तेजरहित.

मम—मेरा.

मया—कृपा.

मयूरपति—स्वामि कार्तिक.

मरट्ठे—मरहटा एक जाती जो इस समय इन्दोर ग्वालियर आदि राज्यों पर राज्य करती हैं और मुगल बादशाहत के घटावके वक्त यही प्रबल हुएथे.

मरुदेस—मारवाड (जोधपुर बीकानेरका राज्य)

मर्दन—मसलना.

मर्दिभैंसा—महिषासुर दैत्य को मसलने वाली.

मलीन—मैला.

मल्लिनाथ—ये राठोड राजपूत थे और जोधपुर महाराजा सलखाजी-के ज्येष्ट पुत्रथे, ये साधु-वेशमें रहते थे, इनकी कई करामातें प्रसिद्ध हैं इन का जन्म मेहवे गाम में हुआ था। उसी गामके नामसे अब मारवाडमें परगना मशहूरहै. जो लूनी नदीके आसपासका प्रांत है.

मल्हार—मल्हार राव मरहटा राजा.

मसालची—चराग जलाने वाला.

महतारी—माता.

महमन्त—आनन्द देने वाला.

महातत्त्व—बुद्धि.

महानन्द—नाम.

महामन्त्र—"ह्रीं" से प्रयोजन है.

महारथी—लडनेवाला बहादुर.

महाविद्या—काली आदिक दश देवियें.

महिमा—बडाई

महिषासुर—एक भैंसके स्वरूपमें दैत्य.

महेस—महादेव.

माई—माता,

माजी—माता.

मांडव--एक ऋषि.
मात--माता.
माथुर--कायस्थ जाती में एक शाखा.
माधोराम-ये "करुणाबत्तीसी" व "शक्तिभक्तिप्रकाश" के बनानेवाले कायस्थवंशी मुंशी-थे देखो इनका वृत्तान्त भूमिका में.
मान--घमंड.
मानक चुहान-अजमेरके एक राजा.
मानक भँडारी--माथुर कायस्थों की एक अल्ल.
मानवी--मनुष्य की शक्ति.
माय--माता.
माया--मिथ्याबुद्धि (झूठे खयाल) का कारण एक प्रकारका अज्ञान, ईश्वर की शक्ति.
मायामन्त्र--मायारूपी कल.
मार--कामदेव.
मारकंड--एक ऋषि, इनकी उमर सबसे ज्यादा मानी जातीहै.
मारवाड़--मारवाड़ देश.
मालका--धन (दौलत)
मिथ्यावादी--झूठ बोलने वाला.
मिस--बहाना.
मीन--मच्छी.
मीराबाई--ये मेड़ताके राजा की बेटी और चित्तोड़के राना की स्त्री थी परम भक्त थी उसे रानाने एक बार जहर पिलाया था.
मुक्तकेसी--छूटे हुए बालों वाली (देवी)
मुण्ड--एक दैत्य.
मुदामी--सदाके.
मुदार--भरोसा.
मुदित--प्रसन्न.
मुद्रा--योग की एक क्रिया अंग, देवताको आराधन करनेके लिये अंगुलियोंकी विशेष रचना.
मुन्शी--फारसीका पंडित
मुरार--श्रीकृष्ण.
मुष्ट--मुट्ठी.
मुहि--मुझ, मुझको.
मूक--गूंगा.
मूढ--मूर्ख.
मूर--बिलकुल, जडमें.
मूलप्रकृति--सत्त्व, रज, तम रूप आदि-शक्ति (इसीसे संसार की-उत्पत्ति हुई)
मृग--हिरण.
मेघमाला--घटा.
मेडतवाल--माथुर कायस्थोंमें एक अल्ल.
मेड़ता-मारवाड़ का एक नगर.
मेनत--परिश्रम.
मेरु-उत्तर दिशा में एक बहुत बड़ा सोने का पर्वत.
मेलदये--मिला दिये.
मेलवे--मिलाने (जीव ब्रह्मको एक करने)

भेवासी--गाय भैंस वाले छोटे गामके रहने वाले (देहाती)

मेह--वृष्टि.

मेहवो--मारवाड में एक गाम और उसी गामके नाम से एक परगना, जहां मल्लीनाथ जी, रूपांदे आदिक सिद्ध हुएथे.

मेहो--ये मांगलिया जातका राजपूत करामाती हुआ और अभी तक मारवाड़ में चापावतों की देसणोकके पास पुजाता है.

मैनका--एक अप्सरा, हिमालयकी स्त्री.

मैमा--बड़ाई.

मो--मुझ.

मोक्ष--जीव का जन्ममृत्यु से बिलकुल छूटजाना.

मोचनी--छुडानेवाली.

मोजजोखै--आनन्द.

मोर--मेरा, मयूर (पक्षी)

मोह--बे समझी (ये मेरे हैं वा मै इनका हू ऐसा अज्ञान) मुहब्बत.

मोहनी--मोहनेवाली (ईश्वरने एक समय दैत्योंको गाफिल करनेके लिये यह स्वरूप किया था)

मोहि--मुझको.

मौन--न बोलना.

म्लेच्छ--नीच जाती, राक्षस.

(य)

यक्ष--एक प्रकारके देवता जो कुबेरके आधीन में रहतेहैं.

यजन--यज्ञ करना.

यम--इन्द्रिय आदि का रोकना.

यमराज--धर्मराज.

यवन--मुसलमान.

यादव--राजा यदुका वंश जिस में श्रीकृष्ण का अवतार हुआ है अंतमें दुर्वासा ऋषिके शापसे सब यादव मद्य पीकर आपसमें कट मरें और श्रीकृष्णने पृथ्वीकाभार उतारनेकी नियतसे वैसा होनेदिया.

युक्ति--तरकीब.

युग--सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि ये ४ युग.

युवान--जवान.

योग--जीवात्मा और परमात्माका एक होना, पतञ्जलि ऋषिका बनाया शास्त्र.

योगनिद्रा--योगरूपी नींद, दुर्गा.

(र)

रक्तपान--लहूका पीजाना.

रक्तबीज--एक दैत्य.

रक्तासुर--एक दैत्य.

रक्षक--रक्षा करने वाली.

रघुनाथ--रामचन्द्र भगवान् (विष्णु.)

रङ्क--गरीब.

रचिगो--बनागया.

रच्छनी–रक्षा करने वाली.
रच्छा–रक्षा.
रछपाल–रक्षा करने वाली.
रज–धूल.
रञ्जन–प्रसन्न करने वाली.
रणसिंह–ये पँवार राजपूत कच्छ देशमें सिद्ध और दानी हुए.
रतन–रत्न.
रति–प्रीति (भक्ति)
रमा–लक्ष्मी.
रमी–चलीगई.
रम्भा–एक अप्सरा.
रवि–सूर्य.
रसना–जीभ.
रसीला–रस (सुख) लेनेवाला.
राँकोबाँको–दो पति, स्त्रीका नाम, ये पंढुरपुरमें लकड़ी बेंचकर पेट भरतेथे, वे निस्वार्थी भक्त थे, नामदेव की सिफारससे परीक्षाके निमित्त विष्णुने एक थैली रास्तेमें डालदी परंतु उन्होंने नहीं छुई.
राजऋषि–क्षत्रिय जातिका ऋषि.
राजत–शोभताहै.
राधिका–परमात्माकी एक शक्ति, जो श्रीराम के शाप से वृन्दावनमें वृषभानुकी कन्या हुई. यह श्रीकृष्णकी प्रधान गोपी थी.
रानों–राजा.
रामदे–रामदेव, ये तँवर जातिके राजपूत थे और बड़े करामाती हुए-हैं ये अभीतक पोखरणके पास "रुणेचा" नामक ग्राम-में पुजातेहैं.
राय–मालिक.
राव–राजा (अमीर)
रावन–लंकाका राजा.
रावरे–आपके.
रावल–राजा.
राह–रास्ता.
रीधे-ऋद्धिको पाई.
रु–और
रुक्मिणी--श्रीकृष्णकी स्त्री.
रुण्ड -मस्तक.
रुद्र--शिव.
रूठे- नाराज.
रूपाँदे–जैसलमेर के रावलजी की स्त्री, बडी देवी भक्त थी । एक दिन जब मदिरा मांस थाल में लेकर देवीजीकी पूजा को जातीथी और रावलजीने पकडा तो देवी की कृपासे खाने पीने की वस्तुएं फूल, पांन इत्यादी पूजा की सामग्री बनगई ।
रेवत--एक राजा जिस ने पूर्वसमुद्रके किनारे जगदीशका मंदिर बनाया.
रैदास--एक चमार भक्त.
रैन--रात.

शूल–त्रिशूल (एक प्रकारका शस्त्र.)
श्याम–श्रीकृष्ण.
श्यामा–जमुना, राधा.
श्रम–मिहनत.
श्रवण–सुनना, कान.
श्रुति–वेद.
श्रेनि–पंक्ति (कतार)

(ष)

षटपद–जूं (स्वेदज कीट)
षटमति–छहों शास्त्रों का सिद्धान्त
षटरस–खट्टो, खारो, तीखौ, कडुओं, कसैलों, मधुर, (मीठा)
षटशास्त्र न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त.
संहार–नाश करना.
संज्ञा–नाम.
सकल–सब.
सकाम–फलकी इच्छासे किया हुआ. काम.
सखा–मित्र.
सखी–उदार.
सगरी–सब.
सगुण–सत्त्व, रज, तम गुणोंके सहित. ब्रह्म (ईश्वर)
सङ्कल्प–खयाल.
सङ्ख्या–गिन्ती.
सठपाठ–मूर्खताका पाठ.
सत–श्रद्धा.
सतयुग–चारयुगोंमेंका पहिला युग १७२८००० वर्षका.
सतसील–पतिव्रता.
सँतोखै–संतोष (तसल्ली) देती है.
सत्ता–होना, हुकूमत.
सत्यभामा–सत्राजित राजाकी कन्या और श्रीकृष्णकी स्त्री.
सत्यवादी–सच बोलने वाला.
सनक–, सनत–, सनन्द–, सनातन– } ब्रह्माके पुत्र
सनाथ–कृतार्थ.
सन्त–भक्तजन.
सपूत–अच्छा पुत्र.
सबील–समाधान, मार्ग.
सबेर–शीघ्र.
समरत्थ–समर्थ.
समागम–इकठा होना.
समाज–मनुष्योंका समूह.
समाधि–ध्येय वस्तुमें एकाग्र होकर मनका टिकाना रूप ध्यान-विशेष.
समुद्रपार–लंका.
समृद्धि–दौलत.
समैं–समय.
सम्पत्ति–धन.
सम्भूतीया–पार्वती.
सयानी–समझदार.

सर--बाण.
सरजनहार--पैदा करनेवाला.
सरनसधार--शरणागतको आधाररूप.
सरनाई--शरणमें रखनेवाली.
सरसाई--सरसब्जकी.
सरीक--शामिल.
सरे--पूरे हुए.
सरेगो--निर्वाह होगा.
सरोरुह--कमल.
सर्द--शर्द ऋतु (आसोज कार्तिक)
सर्बिलंद-एक गुजरातके सूबेदारका नाम.
सर्वव्यापी--सब जगह मौजूद.
सलाप--स्नेहके साथ आपसमें बातचीत करना.
सहल--साधारण.
सहँसमुख--शेषनाग.
सहाय--रक्षा.
साकम्भरी--पत्ते फूलोंसे पालनेवाली (देवी)
साख-साक्षी.
साखि--गवाह.
सागर--समुद्र (देखो जहाज शब्द)
साङ्ख्य--महर्षि कपिल का बनाया हुआ शास्त्र, जिसमें प्रकृति पुरुष तत्त्वोंका निर्धार है, ज्ञान.
साङ्ख्ययोग--ज्ञानसे ही जीव ब्रह्मकी-एकता करना.
साज--सामग्री.
साँझ--सायंकाल (शाम)
सातसुख--नीरोगता, संपत्ति, अधिकार सुस्थानवास, सतीस्त्री, सुपुत्र, सन्मित्र ये लौकिकसातसुखहै.
साता--आराम.
साध--साधु (महात्मा)
साधन--जिससे कोई चीज सिद्ध कीजावे
साधार--आसरा देनेवाली.
साधिका--साधनेवाली अर्थात् पूरा-करने वाली.
साँभर--एक कसबा, जो जयपुर जोधपुर राज्यों की सीमा पर है और वहां निमक पडताहै.
सामधर्म--खैरख्वाही.
सारथी--रथ हाँकने वाला.
सारदा--सरस्वती.
सासना--हित साधन (भलाई) में लगाना.
साह--सेठ, बादशाह.
सिचान--एक पक्षी (सकरा)
सिचियाय--सत्यसे पुष्टीपाकर.
सिथिल--ढीली, कमजोर.
सिद्ध--सिद्धिवाला.
सिद्धपीठ--देवताके विराजने का मुख्य-स्थान.
सिद्धवट--एकस्थान.
सिन्धु--समुद्र.
सिसुपाल--चेदिदेश (चंदेली) का राजा और श्रीकृष्णका फूफेरा भाई जिसे श्रीकृष्णने मारा.
सिंह आसनी--सिंह पर सवार होनेवाली
सीत--शिशिर ऋतु (माघ, फागुन)

सीता--भगवान् रामचन्द्र की स्त्री.

सीधे--सिद्धि को प्राप्त हुए.

सीप--जिसमें मोती पैदा होतीहै.

सु--अच्छा, वह.

सुकुमार--कोमल (नाज़ुक)

सुखमा--सुन्दरता.

सुखरास--अत्यन्त सुख.

सुदामा--श्रीकृष्णका सखा और भक्त जो सुदामापुरी (पोरबंदर) काठियावाड़में हुआ है.

सुधा--अमृत.

सुधाधर--चन्द्रमा.

सुधि--खबर, होश.

सुबेर--उस हाथीका नाम है जिसे मगरने पकड़कर पानीमें खींचा जब हाथी बल करके थक गया और क़रीब डूबनेके ही था उस समय हरि-नाम पुकारा तो विष्णुने उसे उबारा.

सुभाय--स्वभाव.

सुमति--उत्तम ज्ञान.

सुमार--गिन्ती.

सुमुख--मुख्य.

सुम्भ--एक दैत्य.

सुर--देवता.

सुरत--ध्यान स्मरण.

सुरतरु--कल्पवृक्ष.

सुरथ--एक राजा जिस का दुर्गा में वर्णन है

सुरपाल--इन्द्र.

सुरापी--मद्य पीनेवाला (शराबी)

सुरेसी--इन्द्र की शक्ति.

सूँधा--एक गाँव.

सूम--कंजूस.

सूर--बहादुर.

सूलपानी--जिसके हाथ में त्रिशूल है (महादेव)

सृष्टिकर्ता--संसारको रचनेवाला.

से--जैसे.

सेनी--से.

सेतु--पुल (भगवान् रामचन्द्र ने) भारतवर्ष और लंकाके बीच समुद्र पर पुल बांधकर अपनी सेना को लंका में उतारा था.

सेव--सेवा.

सेवक--चाकर.

सेस--शेषनाग.

सैन--फौज, लेटना, शय्या, नाइयोंमें एक भक्त हुआ है.

सैंसदल कमल--योगशास्त्र के अनुसार शरीर में छः चक्र हैं उनमें जो ब्रह्मरंध्र (कपाल) में चक्र है उसके हजार पखडी-हैं और उसका नाम "सुधाधर" है शुद्ध और आदि प्रकृति का वही स्थान है चक्रोंको कमल भी कहतेहैं.

सो–समान (जैसा), वह.
सोध–खबर.
सोसनी–चूसकर रस पीना.
सोनवाय–एक गाँव
स्थूल–मोटा.
स्मृति–धर्मशास्त्र.
स्यार–गीदड़.
स्वभाव–आदत.
स्वाति–आषाढ मासकी पूर्णिमाके दिन जब सूर्य स्वाति नक्षत्र पर आताहै तब बादल से जो बूंद समुद्र में गिरतीह वे सीपमें गिरकर मोती बनतीहैं.
स्वान–कुत्ता.
स्वामिकुमार–कार्तिक स्वामि.
स्वारथी–मतलबी.

(ह)

हठ–जिद्द.
हठयोग–एक प्रकार का योग, जिसमें नेती, धोती, आदि क्रियायें की जातीहैं.
हने–मारे.
हरि–विष्णु.
हरी–विष्णु, छीनली.
हर्भू–सांखला जाति का राजपूत भक्त मारवाड़ में ''बैंगटी'' नामक गांव-में हुवा है.
हवन–होम.
हाटक–सोना.
हाल–हालत, इस समय.
हिङ्गलाज–हिन्दुस्थान के पश्चिम में एक स्थान है जहाँ देवी-का मंदिर है.
हितकारी–भलाई करने वाला.
हिमन्त–हेमन्त ऋतु (मृगशीर्ष, पौष)
हीला–पेशा (जातिकर्म)
हुतो–था.
हेत–कारण, प्रीति.
हेमगिरि–हिमालय पर्वत.
हेरत–देखते.
हेरिये–देखिये.
हेरवी–देखना पड़ताहै.
होरी–होली (फाग) का उत्सव.

इति ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास.
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS